وَمَا لِيَ لَآ اَعۡبُدُ الَّذِيۡ فَطَرَنِيۡ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٢٢﴾

22	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	पैदा किया मुझे	वह जिस ने	मैं न इबादत करूँ	मुझे	और क्या हुआ

ءَاَتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنۡ يُّرِدۡنِ الرَّحۡمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغۡنِ عَنِّيۡ

न काम आए मेरे	कोई नुक़्सान	रहमान-अल्लाह	वह चाहे	अगर	ऐसे माबूद	उस के सिवा	क्या मैं बना लूँ

شَفَاعَتُهُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَا يُنۡقِذُوۡنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيۡۤ اِذًا لَّفِيۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيۡۤ

बेशक मैं	24	खुली	अलबत्ता गुमराही में	उस वक़्त	बेशक मैं	23	और न छुड़ा सकें वह मुझे	कुछ भी	उन की सिफ़ारिश

اٰمَنۡتُ بِرَبِّكُمۡ فَاسۡمَعُوۡنِ ﴿٢٥﴾ قِيۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيۡتَ قَوۡمِيۡ

मेरी क़ौम	ऐ काश	उस ने कहा	जन्नत	तू दाख़िल हो जा	इरशाद हुआ	25	पस तुम मेरी सुनो	तुम्हारे रब पर	मैं ईमान लाया

يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِيۡ رَبِّيۡ وَجَعَلَنِيۡ مِنَ الۡمُكۡرَمِيۡنَ ﴿٢٧﴾

27	नवाज़े हुए लोग	से	और उस ने किया मुझे	मेरा रब	वह बात जिस की वजह से उस ने बख़्श दिया मुझे	26	वह जानती

وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلٰى قَوۡمِهٖ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ مِنۡ جُنۡدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنۡزِلِيۡنَ ﴿٢٨﴾

28	उतारने वाले	और न थे हम	आस्मान	से	कोई लश्कर	उस के बाद	उस की क़ौम	पर	और नहीं उतारा हम ने

اِنۡ كَانَتۡ اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ خٰمِدُوۡنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسۡرَةً

हाए हस्रत	29	बुझ कर रह गए	वह	पस अचानक	एक	चिंघाड़	मगर	न थी

عَلَى الۡعِبَادِ ۚ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمۡ يَرَوۡا

क्या उन्हों ने नहीं देखा	30	हँसी उड़ाते	उस से	वह थे	मगर	कोई रसूल	नहीं आया उन के पास	बन्दों पर

كَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنَ الۡقُرُوۡنِ اَنَّهُمۡ اِلَيۡهِمۡ لَا يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٣١﴾ وَاِنۡ

और नहीं	31	लौट कर नहीं आएंगे वह	उन की तरफ़	कि वह	नसलों से	उन से क़ब्ल	हलाक कीं हम ने	कितनी

كُلٌّ لَّمَّا جَمِيۡعٌ لَّدَيۡنَا مُحۡضَرُوۡنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الۡاَرۡضُ الۡمَيۡتَةُ ۚ اَحۡيَيۡنٰهَا

मुर्दा	ज़मीन	उन के लिए	एक निशानी	32	हाज़िर किए जाएंगे	हमारे रूबरू	सब के सब	मगर	सब

وَاَخۡرَجۡنَا مِنۡهَا حَبًّا فَمِنۡهُ يَاۡكُلُوۡنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلۡنَا فِيۡهَا جَنّٰتٍ

बाग़ात	उस में	और बनाए हम ने	33	वह खाते हैं	पस उस से	अनाज	उस से	और निकाला हम ने	हम ने ज़िन्दा किया उसे

مِّنۡ نَّخِيۡلٍ وَّاَعۡنَابٍ وَّفَجَّرۡنَا فِيۡهَا مِنَ الۡعُيُوۡنِ ﴿٣٤﴾ لِيَاۡكُلُوۡا

ताकि वह खाएं	34	चश्मे	से	उस में	और जारी किए हम ने	और अंगूर	खजूर	से- के

مِنۡ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتۡهُ اَيۡدِيۡهِمۡ ؕ اَفَلَا يَشۡكُرُوۡنَ ﴿٣٥﴾ سُبۡحٰنَ الَّذِيۡ خَلَقَ

पैदा किए	वह ज़ात जिस ने	पाक	35	तो क्या वह शुक्र न करेंगे	उन के हाथों	बनाया उसे	और नहीं	उस के फलों से

الۡاَزۡوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنۡۢبِتُ الۡاَرۡضُ وَمِنۡ اَنۡفُسِهِمۡ وَمِمَّا لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٣٦﴾

36	वह नहीं जानते	और उस से जो	और उन की जानों से	ज़मीन	उगाती है	उस से जो	हर चीज़	जोड़े

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيۡلُ ۖ نَسۡلَخُ مِنۡهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمۡ مُّظۡلِمُوۡنَ ﴿٣٧﴾

37	अन्धेरे में रह जाते हैं	वह	तो अचानक	दिन	उस से	हम खींचते हैं	रात	उन के लिए	और एक निशानी

और मुझे क्या हुआ (मेरे पास क्या उज़्र है) कि मैं उस की इबादत न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया, और तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (22)
क्या मैं उस के सिवा ऐसे माबूद बनालूँ? अगर अल्लाह मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे काम न आए कुछ भी, और न वह मुझे छुड़ा सकें। (23)
बेशक मैं उस वक़्त खुली गुमराही में हूँगा। (24)
बेशक मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया, पस तुम मेरी सुनो। (25)
(उस शहीद को) इरशाद हुआ कि तू जन्नत में दाख़िल हो जा, उस ने कहा: ऐ काश! मेरी क़ौम जानती। (26)
वह बात जिस की वजह से मुझे बख़्श दिया मेरे रब ने और उस ने मुझे (अपने) नवाज़े हुए लोगों में से किया। (27)
और हम ने उस के बाद उस की क़ौम पर कोई लशकर नहीं उतारा आस्मान से, और न हम उतारने वाले थे (भेजने की हाजत थी)। (28)
(उन की सज़ा) न थी मगर एक चिंघाड़, पस वह अचानक बुझ कर रह गए। (29)
हाए हस्रत बन्दों पर! कि उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस की हँसी उड़ाते थे। (30)
क्या उन्हों ने नहीं देखा? हम ने उन से क़ब्ल कितनी नसलें हलाक कीं कि वह उन की तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (31)
और कोई एसा (नहीं) मगर सब के सब हमारे रूबरू हाज़िर किए जाएंगे। (32)
और मुर्दा ज़मीन उन के लिए एक निशानी है, हम ने उसे ज़िन्दा किया और हम ने उस से अनाज निकाला, पस वह उस से खाते हैं। (33)
और हम ने उस में बाग़ात बनाए (लगाए) खजूर और अंगूर के, और हम ने उस में चश्मे जारी किए। (34)
ताकि वह उस के फलों से खाएं और उसे नहीं बनाया उन के हाथों ने, तो क्या वह शुक्र न करेंगे? (35)
पाक है वह ज़ात जिस ने हर चीज़ के जोड़े पैदा किए उस (क़बील) से जो ज़मीन उगाती है (नबातात) और ख़ुद उनकी जानों (इन्सानों में से) और उन में से जिन्हें वह (ख़ुद भी) नहीं जानते। (36)
और उन के लिए रात एक निशानी है, हम दिन को उस से खींचते (निकालते) हैं तो वह अचानक अन्धेरे में रह जाते हैं। (37)

وَالشَّمْسُ تَجْرِىْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ

और चाँद	38	जानने वाला (दाना)	ग़ालिब	निज़ाम	यह	अपने	ठिकाने (मुक़र्ररा रास्ते)	चलता रहता है	और सूरज

قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِىْ

लाइक़ (मजाल)	सूरज	न	39	पुरानी	खजूर की शाख़ की तरह	हो जाता है	यहाँ तक कि	मनज़िलें	हम ने मुक़र्रर कीं उस को

لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِىْ فَلَكٍ

दाइरे में	और सब	दिन	पहले आ सके	रात	और न	चाँद	जा पकड़े वह	कि	उस के लिए

يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾

41	भरी हुई	कश्ती में	उन की औलाद	हम ने सवार किया	कि हम	उन के लिए	और एक निशानी	40	तैरते (गर्दिश करते) हैं

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ

तो न फ़र्याद रस	हम ग़र्क़ कर दें उन्हें	हम चाहें	और अगर	42	वह सवार होते हैं	जो-जिस	उस (कश्ती) जैसी	उन के लिए	और हम ने पैदा किया

لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا

और जब	44	एक वक़्ते मुअ़य्यन तक	और फ़ाइदा देना	हमारी तरफ़ से	रहमत	मगर	43	छुड़ाए जाएं	और न वह	उन के लिए

قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا

और नहीं	45	तुम पर रहम किया जाए	शायद तुम	तुम्हारे पीछे	और जो	तुम्हारे सामने	जो	तुम डरो	उन से	कहा जाए

تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا

और जब	46	रूगर्दानी करते	उस से	वह हैं	मगर	उन का रब	निशानियों में से	कोई निशानी	उन के पास

قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

उन लोगों से जो ईमान लाए (मोमिन)	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	कहते हैं	तुम्हें दिया अल्लाह ने	उस से जो	ख़र्च करो तुम	उन से	कहा जाए

اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾

47	खुली	गुमराही	में	मगर-सिर्फ़	तुम	नहीं	उसे खाने को देता	अगर अल्लाह चाहता	(उस को) जिसे	क्या हम खिलाएं

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ

वह इन्तिज़ार नहीं कर रहे हैं	48	सच्चे	तुम हो	अगर	यह वादा	कब	और वह कहते हैं

اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

फिर न कर सकेंगे	49	बाहम झगड़ रहे होंगे	और वह	वह उन्हें आ पकड़ेगी	एक	चिंघाड़	मगर

ع ١٨ ٣ ٢ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ

तो यकायक वह	सूर में	और फूंका जाएगा	50	वह लौट सकेंगे	अपने घर वाले	तरफ़	और न	वसीयत करना

مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا

किस ने उठा दिया हमें	ऐ वाए हम पर	वह कहेंगे	51	दौड़ेंगे	अपने रब की तरफ़	क़ब्रें	से

مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	रसूलों	और सच कहा था	रहमान-अल्लाह	जो वादा किया	यह	हमारी क़ब्रें	से

وقف لازم
وقف منزل
وقف غفران

और सूरज अपने मुक़र्ररा रास्ते पर चलता रहता है, यह अल्लाह ग़ालिब और दाना का निज़ाम (मुक़र्रर करदह) है। (38)
और चाँद के लिए हम ने मनज़िलें मुक़र्रर कीं यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी शाख़ की तरह हो जाता है (पहली का बारीक सा चाँद)। (39)
न सूरज की मजाल कि चाँद को जा पकड़े और न रात की (मजाल) कि पहले आ सके दिन से, और सब अपने दाइरे में गर्दिश करते हैं। (40)
और उन के लिए एक निशानी है कि हम ने उन की औलाद को सवार किया भरी हुई कश्ती में। (41)
और हम ने उन के लिए उस कश्ती जैसी (और चीज़ें) पैदा कीं जिन पर वह सवार होते हैं। (42)
और अगर हम चाहें तो हम उन्हें ग़र्क़ कर दें तो न (कोई) उन के लिए फ़र्याद रस (हो) और न वह छुड़ाए जाएंगे। (43)
मगर हमारी रहमत से (कि पार लगते हैं) और एक वक़्ते मुअ़य्यन तक फ़ाइदा उठाते हैं। (44)
और जब उन से कहा जाए कि तुम डरो उस से जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे है, शायद तुम पर रहम किया जाए (तो सुन कर नहीं देते)। (45)
और उन के पास उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दानी करते हैं। (46)
और जब उन से कहा जाए कि जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से ख़र्च करो तो काफ़िर कहते हैं मोमिनों से कि क्या हम उसे खिलाएं? जिसे अगर अल्लाह चाहता तो उसे खाने को देता, तुम सिर्फ़ खुली गुमराही में हो। (47)
और वह (काफ़िर) कहते हैं कि कब (पूरा होगा) यह वादाए (क़ियामत)? अगर तुम सच्चे हो। (48)
वह इन्तिज़ार नहीं करते हैं मगर एक चिंघाड़ (सूर की तुन्द आवाज़) की, जो उन्हें आ पकड़ेगी और वह बाहम झगड़ रहे होंगे। (49)
फिर न वह वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों की तरफ़ लौट सकेंगे। (50)
और (दोबारा) फूंका जाएगा सूर में तो वह यकायक क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ दौड़ेंगे। (51)
वह कहेंगे हाय हम पर! हमें किस ने उठा दिया? हमारी क़ब्रों से, यह है वह जो अल्लाह रहमान ने वादा किया था, और रसूलों ने सच कहा था। (52)

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٥٣﴾

53	हाज़िर किए जाएंगे	हमारे सामने	सब	वह	पस यकायक	एक	चिंघाड़	मगर	होगी	न

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٤﴾ اِنَّ

बेशक	54	करते थे	जो तुम	मगर-बस	और न तुम बदला पाओगे	कुछ	किसी शख़्स	न ज़ुल्म किया जाएगा	पस आज

اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿٥٥﴾ هُمْ وَاَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ

सायों में	और उन की बीवियां	वह	55	बातें (मज़े करने में)	एक शुग़्ल में	आज	अहले जन्नत

عَلَى الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	जो वह चाहेंगे	और उन के लिए	मेवा	उस में	उन के लिए	56	तकिया लगाए हुए	तख़्तों पर

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	मुज्रिमो (जमा)	ऐ	आज	और अलग हो जाओ तुम	58	मेहरबान परवरदिगार	से	फ़रमाया जाएगा	सलाम

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ

दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह	शैतान	परस्तिश न करना	ऐ औलादे आदम	तुम्हारी तरफ़	क्या मैं ने हुक्म नहीं भेजा था

وقف غفران

مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾ وَّاَنِ اعْبُدُوْنِيْ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ اَضَلَّ

और तहक़ीक़ गुमराह कर दिया	61	सीधा	रास्ता	यही	और यह कि तुम मेरी इबादत करना	60	खुला

مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ

वह जिस का	जहन्नम	यह है	62	सो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?	बहुत सी	मख़्लूक़	तुम में से

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾ اَلْيَوْمَ

आज	64	तुम कुफ़्र करते थे	उस के बदले जो	आज	उस में दाख़िल हो जाओ	63	तुम से वादा किया गया था

نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ اَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا

वह थे	उस की जो	उन के पाऊँ	और गवाही देंगे	उन के हाथ	और हम से बोलेंगे	उन के मुँह	पर	हम मुहर लगा देंगे

يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى

तो कहां	रास्ता	फिर वह सबक़त करें	उन की आँखें	पर	तो मिटा दें (मिलयामेट करदें)	और अगर हम चाहें	65	कमाते (करते थे)

يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا

फिर न कर सकें	उन की जगहें	पर-में	हम मस्ख़ कर दें उन्हें	और अगर हम चाहें	66	वह देख सकेंगे

ع ١٧ ٣

مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ

ख़िल्क़त (पैदाइश) में	औन्धा कर देते हैं	हम उम्र दराज़ कर देते हैं	और जिस	67	और न वह लौटें	चलना

اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ

नसीहत	मगर	वह (यह)	नहीं	उस के लिए	और नहीं शायान	शेर	और हम ने नहीं सिखाया उस को	68	तो क्या वह समझते नहीं?

وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿٦٩﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾

70	काफ़िर (जमा)	पर	बात (हुज्जत)	और साबित हो जाए	ज़िन्दा	हो	जो	ताकि (आप स) डराएं	69	और क़ुरआन वाज़ेह

(यह) न होगी मगर एक चिंघाड़, पस यकायक वह सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएंगे। (53) पस आज ज़ुल्म न किया जाएगा किसी शख़्स पर कुछ (भी) और जो तुम करते थे पस उसी का बदला पाओगे। (54) बेशक आज अहले जन्नत एक शुग़्ल में ख़ुश होते होंगे। (55) वह और उन की बीवियां सायों में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए (बैठे) होंगे। (56) उन के लिए उस (जन्नत) में हर क़िस्म का मेवा और उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा)। (57) मेहरबान परवरदिगार की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जाएगा। (58) और ऐ मुज्रिमो! तुम आज अलग हो जाओ। (59) क्या मैं ने तुम्हारी तरफ़ हुक्म नहीं भेजा था ऐ औलादे आदम! कि तुम परस्तिश न करना शैतान की, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (60) और यह कि तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (61) और उस ने तुम में से बहुत लोगों को गुमराह कर दिया, सो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते थे? (62) यह है वह जहन्नम जिस का तुम से वादा किया गया था। (63) तुम जो कुफ़्र करते थे उस के बदले आज इस में दाख़िल हो जाओ। (64) आज हम उन के मुँह पर मुहर लगा देंगे, और हम से उन के हाथ बोलेंगे और उन के पाऊँ गवाही देंगे जो वह करते थे। (65) और अगर हम चाहें तो उन की आँखें मिलयामेट कर दें, फिर वह रास्ते की तरफ़ सबक़त करें (दौड़ें) तो कहां देख सकेंगे? (66) और अगर हम चाहें तो उन्हें उन की जगहों पर मस्ख़ कर दें, फिर वह न चल सकेंगे और न लौट सकेंगे। (67) और हम जिस की उम्र दराज़ करते हैं उसे पैदाइश में औन्धा कर देते हैं तो क्या वह समझते नहीं? (68) और हम ने उस (आप स) को शेर नहीं सिखाया और यह आप (स) के शायान नहीं है, यह नहीं मगर (किताबे) नसीहत और वाज़ेह क़ुरआन। (69) ताकि आप (स) (उस को) डराएं जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर हुज्जत साबित हो जाए। (70)

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ٧١

71	मालिक हैं	उन के	पस वह	चौपाए	बनाया अपने हाथों (कुदरत) से	उस से जो	उन के लिए	हम ने पैदा किया	या क्या वह नहीं देखते?

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ٧٢ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ

फ़ाइदे	उन में	और उन के लिए	72	वह खाते हैं	और उन से	उन की सवारी	पस उन से	उन के लिए	और हम ने फ़रमांबरदार किया उन्हें

وَمَشَارِبُ ۚ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ٧٣ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَعَلَّهُمْ

शायद वह	और माबूद	अल्लाह के सिवा	और उन्हों ने बना लिए	73	क्या फिर वह शुक्र नहीं करते?	और पीने की चीज़ें

يُنْصَرُونَ ٧٤ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُحْضَرُونَ ٧٥

75	हाज़िर किए जाएंगे	लशकर	उन के लिए	और वह	उन की मदद	वह नहीं कर सकते	74	मदद किए जाएं

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ٧٦ أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ وقف لازم

इन्सान	क्या नहीं देखा	76	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो वह छुपाते हैं	बेशक हम जानते हैं	उन की बात	पस आप (स) को मग़मूम न करे

أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ٧٧ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا

एक मिसाल	हमारे लिए	और उस ने बयान की	77	खुला	झगड़ालू	वह	फिर नागहां	नुत्फ़े से	कि हम ने पैदा किया उस को

وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ٧٨ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي

वह जिस ने	उसे ज़िन्दा करेगा	फ़रमा दें	78	गल गई	जब कि वह	हड्डियां	कौन ज़िन्दा करेगा	कहने लगा	अपनी पैदाइश	और भूल गया

أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ٧٩ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ

से	तुम्हारे लिए	पैदा किया	जिस ने	79	जानने वाला	पैदा करना	हर तरह	और वह	पहली बार	उसे पैदा किया

الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ٨٠ أَوَلَيْسَ الَّذِي

वह जिस ने	क्या नहीं	80	सुलगाते हो	उस से	तुम	पस अब	आग	सब्ज़	दरख़्त

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ وَهُوَ وقف غفران ١٢

और वह	हाँ	उन जैसा	वह पैदा करे	कि	पर	क़ादिर	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया

الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ٨١ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ٨٢

82	तो वह हो जाती है	हो जा	उस को	वह कहता है	कि	वह इरादा करे किसी शै का	जब	उस का काम	इस के सिवा नहीं	81	दाना	बड़ा पैदा करने वाला

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٨٣ ع ١٦ / ٥

83	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	हर शै	बादशाहत	उस के हाथ में	वह जिस	सो पाक है

آياتها ١٨٢ ❀ (٣٧) سُورَةُ الصَّافَّاتِ ❀ رُكُوعَاتُهَا ٥

रुकूआत 5	(37) सूरतुस साफ़्फ़ात सफ़ बांधने वाले	आयात 182

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ١ فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا ٢ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ٣ المنزل ٦

3	ज़िक्र (क़ुरआन)	फिर तिलावत करने वाले	2	झिड़क कर	फिर डांटने वाले	1	परा जमा कर	क़सम सफ़ बान्धने वाले

या क्या वह नहीं देखते कि हम ने जो (चीज़ें) अपनी क़ुदरत से बनाईं, उन से उन के लिए पैदा किए चौपाए, पस वह उन के मालिक हैं। (71)
और हम ने उन (चौपायों) को उन के बस में कर दिया, पस उन में से (बाज़) उन की सवारी हैं और उन में से बाज़ को वह खाते हैं। (72)
और उन में उन के लिए (बहुत से) फ़ाइदे और पीने की चीज़ें हैं, क्या फिर वह शुक्र नहीं करते? (73)
और उन्हों ने बना लिए अल्लाह के सिवा और माबूद (इस ख़याले बातिल से कि) शायद वह मदद किए जाएंगे। (74)
वह उन की मदद नहीं कर सकते और वह उन के लिए (मुज्रिम) लशकर (की शक्ल में) हाज़िर किए जाएंगे। (75)
पस आप (स) को उनकी बात मग़मूम न करे। बेशक हम जानते हैं जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (76)
क्या इनसान ने नहीं देखा कि हम ने उस को नुत्फ़े से पैदा किया? और फिर नागहां वह हुआ झगड़ालू खुला। (77)
और उस ने हमारे लिए एक मिसाल बयान की और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कौन हड्डियों को ज़िन्दा करेगा? जब कि वह गल गईं होंगी। (78)
आप (स) फ़रमा दें: उसे वह ज़िन्दा करेगा जिस ने उसे पहली बार पैदा किया, और वह हर तरह से पैदा करना जानता है। (79)
जिस ने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा की, पस अब तुम उस (आग) से सुलगाते हो। (80)
वह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा करे, हाँ (क्यों नहीं)! वह बड़ा पैदा करने वाला दाना है। (81)
उस का काम उस के सिवा नहीं कि वह किसी शै का इरादा करता है तो वह उस को कहता है "हो जा" तो वह हो जाती है। (82)
सो पाक है वह (ज़ाते वाहिद) जिस के हाथ में हर शै की बादशाहत है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (83)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है परा जमा कर सफ़ बान्धने वाले (फ़रिश्तों) की। (1)
फिर झिड़क कर डांटने वालों की। (2)
फिर क़ुरआन तिलावत करने वालों की। (3)

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ

और रब	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	रब	4	अलबत्ता एक	तुम्हारा माबूद	बेशक

الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ۨالْكَوَاكِبِ ﴿٦﴾ وَحِفْظًا

और महफ़ूज़ किया	6	सितारे	ज़ीनत से	आस्माने दुनिया	बेशक हम ने मुज़ैयन किया	5	मशरिक़ों

مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿٧﴾ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ

और मारे जाते हैं	मलाए आला	तरफ़	कान नहीं लगा सकते	7	सरकश	हर शैतान	से

مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ﴿٨﴾ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ﴿٩﴾ اِلَّا مَنْ خَطِفَ

ले भागा	जो	सिवाए	9	अज़ाबे दाइमी	और उन के लिए	भगाने को	8	हर तरफ़	से

الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ

या	ज़ियादा मुश्किल पैदा करना	क्या उन	पस उन से पूछें	10	एक अंगारा दहकता हुआ	तो उस के पीछे लगा	उचक कर

مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ﴿١١﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ﴿١٢﴾

12	और वह मज़ाक़ उड़ाते हैं	आप (स) ने तअज्जुब किया	बल्कि	11	मिट्टी चिपकती हुई	से	बेशक हम ने पैदा किया उन्हें	हम ने पैदा किया	जो

وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ﴿١٤﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ

नहीं	और उन्हों ने कहा	14	वह हँसी में उड़ा देते हैं	वह देखते हैं कोई निशानी	और जब	13	वह नसीहत क़ुबूल नहीं करते	नसीहत की जाए	और जब

هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿١٦﴾

16	फिर उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां	मिट्टी	और हम हो गए	हम मर गए	क्या जब	15	जादू खुला	मगर-सिर्फ़	यह

اَوَ اٰبَاۗؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿١٧﴾ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ

ललकार	पस इस के सिवा नहीं वह	18	ज़लील ओ ख़्वार	और तुम	हाँ	फ़रमा दें	17	हमारे बाप दादा पहले	क्या

وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾ هٰذَا

यह	20	बदले का दिन	यह	हाए हमारी ख़राबी	और वह कहेंगे	19	देखने लगेंगे	वह	पस नागहां	एक

ع ٢١ ٥
يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	तुम जमा करो	21	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जिस	फ़ैसले का दिन

وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ

रास्ता	तरफ़	पस तुम उन को दिखाओ	अल्लाह के सिवा	22	वह परस्तिश करते थे	और जिस	और उन के जोड़े (साथी)

الربع
الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

25	तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते	क्या हुआ तुम्हें	24	उन से पुर्सिश होगी	बेशक वह	और ठहराओ उन को	23	जहन्नम

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاۗءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

27	बाहम सवाल करते हुए	बाज़ पर दूसरे की तरफ़	उन में से बाज़ (एक)	और रुख़ करेगा	26	सर झुकाए फ़रमांबरदार	आज	बल्कि वह

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	ईमान लाने वाले	तुम न थे	बल्कि	वह कहेंगे	28	दाएं तरफ़ से	तुम हम पर आए थे	बेशक तुम	वह कहेंगे

बेशक तुम्हारा माबूद एक ही है। (4)
परवरदिगार है आस्मानों का और
ज़मीन का और जो उन दोनों के
दरमियान है, और परवरदिगार है
मशरिक़ों (मुक़ामाते तुलूअ़) का। (5)
बेशक हम ने मुज़ैयन किया आस्माने
दुनिया को सितारों की ज़ीनत से। (6)
और हर सरकश शैतान से महफ़ूज़
किया। (7)
और मलाए आला (ऊपर की मज्लिस)
की तरफ़ कान नहीं लगा सकते, हर
तरफ़ से (अंगारे) मारे जाते हैं। (8)
भगाने को और उन के लिए दाइमी
अ़ज़ाब है। (9)
सिवाए उस के जो उचक कर ले भागा
तो उस के पीछे एक दहकता हुआ
अंगारा लगा। (10)
पस आप (स) उन से पूछें: क्या उन
का पैदा करना ज़ियादा मुश्किल है
या जो (मख़्लूक़) हम ने पैदा की?
बेशक हम ने उन्हें चिपकती हुई
मिट्टी (गारे) से पैदा किया। (11)
बल्कि आप ने (उन की हालत पर)
तअ़ज्जुब किया और वह मज़ाक़
उड़ाते हैं। (12)
और जब उन्हें नसीहत की जाए तो
वह नसीहत क़ुबूल नहीं करते। (13)
और जब कोई निशानी देखते हैं तो
वह हँसी में उड़ा देते हैं। (14)
और उन्हों ने कहा यह तो सिर्फ़
खुला जादू है। (15)
क्या जब हम मर गए और हम
मिट्टी और हड्डियां हो गए? क्या
हम फिर उठाए जाएंगे? (16)
क्या हमारे पहले बाप दादा (भी)? (17)
आप (स) फ़रमा दें हाँ! और तुम
ज़लील ओ ख़्वार होगे। (18)
पस इस के सिवा नहीं कि वह एक
ललकार होगी, पस नागहां वह
देखने लगेंगे। (19)
और वह कहेंगे, हाए हमारी ख़राबी!
यह बदले का दिन है। (20)
यह फ़ैसले का दिन है, वह जिस
को तुम झुटलाते थे। (21)
तुम जमा करो ज़ालिमों और उन के
साथियों को और जिस की वह
परस्तिश करते थे। (22)
अल्लाह के सिवाए। पस तुम उन को
जहन्नम का रास्ता दिखाओ। (23)
और उन को ठहराओ, बेशक उन
से पुर्सिश होगी। (24)
तुम्हें क्या हुआ? तुम एक दूसरे की
मदद नहीं करते। (25)
बल्कि वह आज सर झुकाए फ़रमांबरदार
(अपने आप को पकड़वाते) हैं। (26)
और उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम
सवाल करते हुए रुख़ करेगा। (27)
वह कहेंगे बेशक तुम हम पर दाएं
तरफ़ से (बड़े ज़ोर से) आते थे। (28)
वह कहेंगे (नहीं) बल्कि तुम ईमान
लाने वाले न थे। (29)

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا

हम पर	पस साबित हो गई	30	सरकश	एक क़ौम	तुम थे	बल्कि	कोई ज़ोर	तुम पर	हमारा	था	और न

قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾ فَاِنَّهُمْ

पस बेशक वह	32	गुमराह	बेशक हम थे	पस हम ने बहकाया तुम्हें	31	अलबत्ता चखने वाले	बेशक हम	हमारा रब	बात

يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	मुजरिमों के साथ	करते हैं	इसी तरह	बेशक हम	33	मुश्तरिक (शरीक)	अज़ाब में	उस दिन

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

और वह कहते हैं	35	वह तकब्बुर करते थे	अल्लाह के सिवा	नहीं कोई माबूद	उन को	कहा जाता	जब	वह थे	बेशक वह

اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ

और तस्दीक़ की	हक़ के साथ	वह आए	बल्कि	36	दीवाना	एक शायर की ख़ातिर	अपने माबूद	छोड़ देने वाले	क्या हम

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

मगर जो	और तुम्हें बदला न दिया जाएगा	38	दर्दनाक	अज़ाब	ज़रूर चखने वाले	बेशक तुम	37	रसूलों की

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	यही लोग	40	ख़ास किए हुए	अल्लाह के बन्दे	मगर	39	तुम करते थे

رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾ عَلٰى

पर	43	नेमत के बाग़ात	में	42	एज़ाज़ वाले होंगे	और वह	मेवे	41	रिज़्क़ मालूम

سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ

लज़्ज़त	सफ़ेद	45	बहता हुआ शराब	से-का	जाम	उन पर-उन के आगे	दौरा होगा	44	तख़्त आमने सामने (जमा)

لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَعِنْدَهُمْ

और उन के पास	47	बहकी बातें करेंगे	उस से	और न वह	ख़राबी (दर्द सर)	न उस में	46	पीने वालों के लिए

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ

उन में से बाज़ (एक)	पस रुख़ करेगा	49	पोशीदा रखे हुए	अंडे	गोया वह	48	बड़ी आँखों वालियां	नीची निगाहों वालियां

عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّىْ كَانَ لِىْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾

51	एक हमनशीन	मेरा	था	बेशक मैं	उन में से	एक कहने वाला	कहेगा	50	बाहम सवाल करते हुए	बाज़ पर (दूसरे की तरफ़)

يَّقُوْلُ ءَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا

और हड्डियां	मिट्टी	और हो गए	हम मर गए	क्या जब	52	सच्चे जानने वाले	से	क्या तू	वह कहता था

ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَاطَّلَعَ

तो वह झांकेगा	54	झांकने वाले हो	तुम	क्या	वह कहने लगा	53	अलबत्ता बदला दिए जाएंगे	क्या हम

فَرَاٰهُ فِىْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾

56	कि तू मुझे हलाक कर डाले	तो क़रीब था	अल्लाह की क़सम	वह कहेगा	55	दोज़ख़	दरमियान	में	तो उसे देखेगा

और हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम एक सरकश क़ौम थे। (30)
पस हम पर हमारे रब की बात साबित हो गई, बेशक हम अलबत्ता (मज़ा) चखने वाले हैं। (31)
पस हम ने तुम्हें बहकाया, बेशक हम (खुद) गुमराह थे। (32)
पस बेशक वह उस दिन अज़ाब में (भी) शरीक रहेंगे। (33)
बेशक हम इसी तरह करते हैं मुजरिमों के साथ। (34)
बेशक जब उन से कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं (तो) वह तकब्बुर करते थे। (35)
और वह कहते हैं: क्या हम अपने माबूदों को छोड़ दें? एक शायर दीवाने की ख़ातिर। (36)
बल्कि वह (स) हक़ के साथ आए हैं और वह (स) तस्दीक़ करते हैं रसूलों की। (37)
बेशक तुम दर्दनाक अज़ाब ज़रूर चखने वाले हो। (38)
और तुम्हें बदला न दिया जाएगा मगर (उस के मुताबिक़) जो तुम करते थे। (39)
(हाँ) मगर अल्लाह के ख़ास किए हुए (चुने हुए) बन्दे। (40)
उन के लिए रिज़्क़ मालूम (मुक़र्रर) है। (41)
(यानी) मेवे, और वह एज़ाज़ वाले होंगे। (42)
नेमत के बाग़ात में। (43)
तख़्तों पर आमने सामने। (44)
दौरा होगा उन के आगे बहते हुए (साफ़) मशरूब के जाम का। (45)
सफ़ेद रंग का, पीने वालों के लिए लज़्ज़त (देने वाला)। (46)
न उस में दर्दसर होगा और न वह उस से बहकी बहकी बातें करेंगे। (47)
और उन के पास होंगी नीची निगाहों वालियां, बड़ी बड़ी आँखों वालियां। (48)
गोया वह अंडे हैं पोशीदा रखे हुए। (49)
फिर उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम सवाल करते हुए रुख़ करेगा। (50)
उन में से एक कहने वाला कहेगा: बेशक (दुनिया में) मेरा एक हमनशीन था। (51)
वह कहा करता था क्या तू (क़ियामत को) सच मानने वालों में से है? (52)
क्या जब हम मर गए और हम हो गए मिट्टी और हड्डियां, क्या हमें बदला दिया जाएगा? (53)
वह कहेगा क्या तुम झांकने वाले हो (दोज़ख़ी को झाँक कर देख सकते हो?) (54)
तो वह झाँकेगा तो उसे देखेगा दोज़ख़ के दरमियान में। (55)
वह कहेगा अल्लाह की क़सम! क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर डाले। (56)

وَلَوْ لَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَمَا نَحْنُ

क्या पस नहीं हम	57	हाज़िर किए जाने वाले	से	तो मैं ज़रूर होता	मेरा रब	नेमत	और अगर न

بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ

बेशक	59	अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से	हम	और नहीं	पहली	हमारी मौत	सिवाए	58	मरने वालों में से

هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ

क्या यह	61	अ़मल करने वाले	पस चाहिए ज़रूर अ़मल करें	इस जैसी (नेमत) के लिए	60	कामयाबी अ़ज़ीम	अलबत्ता वह	यह

خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾

63	ज़ालिमों के लिए	एक आज़माइश	हम ने उस को बनाया	बेशक हम	62	थोहर का दरख़्त	या	ज़ियाफ़त	बेहतर

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ

सर (जमा)	गोया कि वह	उस का ख़ोशा	64	जहन्नम	जड़	में	वह निकलता है	एक दरख़्त	बेशक वह

الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾

66	पेट (जमा)	उस से	सो भरने वाले	उस से	खाने वाले हैं	पस बेशक वह	65	शैतानों

ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى

अलबत्ता तरफ़	उन की वापसी	बेशक	फिर	67	खौलता हुआ पानी	से	मिला मिला कर	उस पर	उन के लिए	बेशक	फिर

الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ

उन के नक़्शे क़दम पर	सो वह	69	गुमराह (जमा)	अपने बाप दादा	उन्हों ने पाया	बेशक वह	68	जहन्नम

يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾

71	अगलों में से अक्सर	उन से पहले	और तहक़ीक़ गुमराह हुए	70	दौड़ते जाते थे

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखें	72	डराने वाले	उन में	और तहक़ीक़ हम ने भेजे

ع ٢ ٥٣ ٦ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ

नूह (अ)	और तहक़ीक़ हमें पुकारा	74	ख़ास किए हुए	अल्लाह के बन्दे	मगर	73	जिन्हें डराया गया

فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

76	बड़ी	मुसीबत	से	और उस के घर वाले	और हम ने नजात दी उसे	75	दुआ क़ुबूल करने वाले	सो हम अलबत्ता खूब

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبَاقِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾

78	बाद में आने वाले	में	उस पर-उस का	और हम ने छोड़ा	77	बाक़ी रहने वाली	वह	उस की औलाद	और हम ने किया

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾

80	नेकोकारों	हम जज़ा देते हैं	इसी तरह	बेशक हम	79	सारे जहानों में	नूह (अ)	पर	सलाम हो

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾

82	दूसरे	हम ने ग़र्क़ कर दिया	फिर	81	मोमिन (जमा)	हमारे बन्दे	से	बेशक वह

और अगर मेरे रब की नेमत न होती तो मैं ज़रूर (अ़ज़ाब के लिए) हाज़िर किए जाने वालों में से होता। (57)
तो क्या अब हम मरने वाले नहीं हैं? (58)
सिवाए हमारी पहली मौत (जिस से हम दो चार हो चुके) और न हम अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से होंगे? (59)
बेशक यही है अ़ज़ीम कामयाबी। (60)
पस इस जैसी नेमत के लिए चाहिए कि ज़रूर अ़मल करें अ़मल करने वाले। (61)
क्या यह बेहतर ज़ियाफ़त है या थोहर का दरख़्त? (62)
बेशक हम ने उस को एक फ़ितना बनाया है ज़ालिमों के लिए। (63)
बेशक वह एक दरख़्त है जहन्नम की जड़ (गहराई) में निकलता है। (64)
उस का ख़ोशा, गोया कि वह शैतानों के सर (साँपों के फन) हैं। (65)
बेशक वह उस से खाएंगे, सो उस से पेट भरेंगे। (66)
फिर बेशक उस (खाने) पर उन के लिए खौलता हुआ पानी (पीप) मिला मिला कर (दिया जाएगा)। (67)
फिर उन की वापसी जहन्नम की तरफ़ होगी। (68)
बेशक उन्हों ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया था। (69)
सो वह उन के नक़्शे क़दम पर दौड़ते जाते थे। (70)
और तहक़ीक़ उन से पहले गुमराह हुए थे (उन के) अगलों में से अक्सर। (71)
तहक़ीक़ हम ने उन में डराने वाले (रसूल) भेजे थे। (72)
सो आप (स) देखें कैसा हुआ उन का अन्जाम जिन्हें डराया गया था? (73)
मगर अल्लाह के ख़ास किए हुए बन्दे (बन्दगाने ख़ास का अन्जाम कितना अच्छा हुआ)। (74)
और तहक़ीक़ नूह (अ) ने हमें पुकारा, सो हम खूब दुआ क़ुबूल करने वाले हैं। (75)
और हम ने उसे और उस के घर वालों को बड़ी मुसीबत से नजात दी। (76)
और हम ने किया उस की औलाद को बाक़ी रहने वाली। (77)
और हम ने उस का (ज़िक्रे ख़ैर) बाद में आने वालों में छोड़ा। (78)
नूह (अ) पर सलाम हो सारे जहानों में। (79)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (80)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (81)
फिर हम ने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। (82)

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾

84	साफ़	दिल के साथ	अपना रब	जब वह आया	83	अलबत्ता इब्राहीम (अ)	उस के तरीक़े पर चलने वाले	से	और बेशक

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	माबूद	क्या झूट मूट के	85	तुम परस्तिश करते हो	किस चीज़	और अपनी क़ौम	अपने बाप को	जब उस ने कहा	

تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

88	सितारे	में-को	एक नज़र	फिर उस ने देखा	87	तमाम जहानों	रब के बारे में	तुम्हारा गुमान	सो क्या	86	तुम चाहते हो

فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ

उन के माबूदों	तरफ़-में	फिर पोशीदा घुस गया	90	पीठ फेर कर	उस से	पस वह फिर गए	89	बीमार हूँ	बेशक मैं	तो उस ने कहा

فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ

उन पर	फिर जा पड़ा वह	92	तुम बोलते नहीं	क्या हुआ तुम्हें?	91	क्या तुम नहीं खाते	फिर कहने लगा

ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ

क्या तुम परस्तिश करते हो	उस ने फ़रमाया	94	दौड़ते हुए	उस की तरफ़	फिर वह मुतवज्जुह हुए	93	अपने दाएं हाथ (क़ुदरत) से	मारता हुआ	

مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا

एक इमारत	उस के लिए	बनाओ	उन्हों ने कहा	96	तुम करते हो	और जो	उस ने पैदा किया तुम्हें	हालांकि अल्लाह	95	जो तुम तराशते हो

فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾

98	नीचा	तो हम ने कर दिया उन्हें	दाओ	उस पर	फिर उन्हों ने चाहा	97	आग में	फिर डाल दो उसे

وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ

से	मुझे अ़ता फ़रमा	ऐ मेरे रब	99	अ़नक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा	अपने रब की तरफ़	जाने वाला हूँ	बेशक मैं	और उस (इब्राहीम) ने कहा

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْىَ

दौड़ने	उस के साथ	वह पहुँचा	फिर जब	101	बुर्दबार	एक लड़का	पस बशारत दी हम ने उसे	100	नेक सालेह (जमा)

قَالَ يٰبُنَىَّ اِنِّىْٓ اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنِّىْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى

तेरी राए	क्या	अब तू देख	तुझे ज़ुबह कर रहा हूँ	कि मैं	ख़्वाब	में	बेशक मैं देखता हूँ	ए मेरे बेटे	उस ने कहा

قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ

से	अल्लाह ने चाहा	अगर	आप जल्द ही मुझे पाएंगे	जो हुक्म आप को किया जाता है	आप करें	ऐ मेरे अब्बा जान	उस ने कहा	

الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾

104	ऐ इब्राहीम (अ)	कि	और हम ने उस को पुकारा	103	पेशानी के बल	(बाप ने बेटे को) लिटाया	दोनों ने हुक्मे (इलाही) मान लिया	पस जब	102	सब्र करने वाले

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ هٰذَا

बेशक यह	105	नेकोकारों	हम जज़ा दिया करते हैं	बेशक हम इसी तरह	ख़्वाब	तहक़ीक़ तू ने सच कर दिखाया

لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾

107	बड़ा	एक ज़बीहा	और हम ने उस का फ़िदया दिया	106	खुली	आज़माइश	अलबत्ता वह

وقف لازم

और बेशक इब्राहीम (अ) उसी के तरीक़े पर चलने वालों में से थे। (83)
जब वह अपने रब के पास आए साफ़ दिल के साथ। (84)
(याद करो) जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहाः तुम किस (वाहियात) चीज़ की परस्तिश करते हो? (85)
क्या तुम अल्लाह के सिवा झूट मूट के माबूद चाहते हो? (86)
सो तमाम जहानों के परवरदिगार के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है? (87)
फिर उस ने सितारों को एक नज़र देखा। (88)
तो उस ने कहा बेशक मैं बीमार हूँ। (89)
पस वह लोग पीठ फेर कर उस से फिर गए। (90)
फिर वह उन के माबूदों में छुप कर घुस गया, फिर वह (बतौरे तमस्ख़र) कहने लगाः क्या तुम नहीं खाते? (91)
क्या हुआ तुम्हें? तमु बोलते नहीं? (92)
फिर वह पूरी क़ुव्वत से मारता हुआ उन पर जा पड़ा। (93)
फिर वह (बुत परस्त) मुतवज्जुह हुए उसकी तरफ़ दौड़ते हुए (आए)। (94)
उस ने फ़रमाया क्या तुम (उनकी) परस्तिश करते हो? जो तुम ख़ुद तराशते हो। (95)
हालांकि अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, और जो तुम करते (बनाते) हो। (96)
उन्हों ने (एक दूसरे को) कहाः उस के लिए एक इमारत (आतिश ख़ाना) बनाओ, फिर उसे आग में डाल दो। (97)
फिर उन्हों ने उस पर दाओ करना चाहा तो हम ने उन्हें ज़ेर कर दिया। (98)
और इब्राहीम (अ) ने कहाः मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ, अ़नक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा। (99)
ऐ मेरे रब! मुझे अ़ता फ़रमा (नेक औलाद) सालेहीन में से। (100)
पस हम ने उसे एक बुर्दबार लड़के की बशारत दी। (101)
फिर जब वह उस के साथ दौड़ने (की उम्र को) पहुँचा तो इब्राहीम (अ) ने कहा कि ऐ मेरे बेटे! बेशक मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुझे ज़ुबह कर रहा हूँ। अब तू देख कि तेरी क्या राए है? उस ने कहा ऐ मेरे अब्बाजान! आप को जो हुक्म किया जाता है वह करें, आप मुझे जल्द ही पाएंगे इंशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) सब्र करने वालों में से। (102)
पस जब दोनों ने हुक्मे इलाही को मान लिया, बाप ने बेटे को पेशानी के बल लिटाया। (103)
और हम ने उस को पुकारा कि ऐ इब्राहीम (अ)! (104)
तहक़ीक़ तू ने ख़्वाब को सच कर दिखाया, बेशक हम नेकोकारों को इसी तरह जज़ा दिया करते हैं। (105)
बेशक यह खुली आज़माइश (बड़ा इम्तिहान था)। (106)
और हम ने एक बड़ा ज़बीहा (क़ुरबानी को) उस का फ़िदया दिया। (107)

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ

इसी तरह	109	इब्राहीम (अ)	पर	सलाम	108	बाद में आने वालों में	उस पर (उस का ज़िक्रे ख़ैर)	और हम ने बाक़ी रखा

نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ

और हम ने उसे बशारत दी	111	मोमिनीन	हमारे बन्दे	से	बेशक वह	110	नेकोकारों	हम जज़ा दिया करते हैं

بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ

इस्हाक़ (अ)	और पर	उस पर-उस को	और हम ने बरकत नाज़िल की	112	सालेहीन	से	एक नबी	इस्हाक़ (अ) की

ع ٣ ٣٩ ٧ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا

और हम ने एहसान किया	और तहक़ीक़ अलबत्ता	113	सरीह	अपनी जान पर	और ज़ुल्म करने वाला	नेकोकार	उन दोनों की औलाद	और से-में

عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾

115	बड़ा	ग़म	से	और उन की क़ौम	और उन दोनों को नजात दी	114	और हारून (अ)	मूसा (अ) पर

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾

117	वाज़ेह	किताब	और हम ने उन दोनों को दी	116	ग़ालिब (जमा)	वही	तो वह रहे	और हम ने मदद की उन की

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا

उन दोनों पर (उन का ज़िक्रे ख़ैर)	और हम ने बाक़ी रखा	118	सीधा	रास्ता	और हम ने उन दोनों को हिदायत दी

فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي

हम जज़ा देते हैं	बेशक हम इसी तरह	120	और हारून (अ)	मूसा (अ) पर	सलाम	119	बाद में आने वालों में

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ

इल्यास (अ)	और बेशक	122	मोमिनीन	हमारे बन्दे	से	बेशक वह दोनों	121	नेकोकारों

لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اَتَدْعُوْنَ

क्या तुम पुकारते हो	124	क्या तुम नहीं डरते	अपनी क़ौम को	जब उस ने कहा	123	रसूलों	अलबत्ता-से

بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ

तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	अल्लाह	125	पैदा करने वाला (जमा)	सब से बेहतर	और तुम छोड़ देते हो	बअ़ल

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ

अल्लाह के बन्दे	सिवाए	127	वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे	तो बेशक वह	पस उन्हों ने झुटलाया	126	पहले

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى

पर	सलाम	129	बाद में आने वालों में	और हम ने बाक़ी रखा उस पर (उस का ज़िक्रे ख़ैर)	128	मुख़लिस (जमा)

اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾ اِنَّهٗ مِنْ

से	बेशक वह	131	नेकोकारों	जज़ा दिया करते हैं	बेशक हम इसी तरह	130	इलयासीन (इल्यास अ)

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾

133	रसूल (जमा)	अलबत्ता-से	लूत (अ)	और बेशक	132	मोमिनीन	हमारे बन्दे

और हम ने उसका ज़िक्रे ख़ैर बाद में आने वालों में बाक़ी रखा। (108)
सलाम हो इब्राहीम (अ) पर। (109)
इसी तरह हम नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (110)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। (111)
और हम ने उसे बशारत दी इस्हाक़ (अ) की (कि वह) एक नबी सालेहीन में से होगा। (112)
और हम ने उस पर बरकत नाज़िल की और इस्हाक़ (अ) पर, और उन दोनों की औलाद में नेकोकार (भी हैं) और अपनी जान पर सरीह ज़ुल्म करने वाले (भी)। (113)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) पर एहसान किया। (114)
और हम ने उन दोनों को और उन की क़ौम को बड़े ग़म (फ़िरऔन के मज़ालिम) से नजात दी। (115)
और हम ने उन की मदद की, तो वही ग़ालिब रहे। (116)
और हम ने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। (117)
और उन दोनों को सीधे रास्ते की हिदायत दी। (118)
और हम ने उन दोनों का ज़िक्रे ख़ैर बाद में आने वालों में बाक़ी रखा। (119)
सलाम हो मूसा (अ) और हारून (अ) पर। (120)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (121)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (122)
और बेशक इल्यास (अ) रसूलों में से थे। (123)
(याद करो) जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम (अल्लाह से) नहीं डरते? (124)
क्या तुम बअ़ल (बुत) को पुकारते हो? और तुम सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ते हो। (125)
(यानी) अल्लाह को (जो) तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले बाप दादा का (भी) रब है। (126)
पस उन्हों ने उसे झुटलाया तो बेशक वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे (पकड़े जाएंगे)। (127)
अल्लाह के मुख़लिस (ख़ास बन्दों) के सिवा। (128)
और हम ने उस का ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रखा बाद में आने वालों में। (129)
सलाम हो इल्यास (अ) पर। (130)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (131)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (132)
और बेशक लूत (अ) रसूलों में से थे। (133)

اِذْ نَجَّیْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِیْنَ ﴿١٣٤﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِی الْغٰبِرِیْنَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ

फिर	135	पीछे रह जाने वाले	में	एक बुढ़िया	सिवाए	134	सब	और उस के घर वाले	हम ने उसे नजात दी	जब

دَمَّرْنَا الْاٰخَرِیْنَ ﴿١٣٦﴾ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَیْهِمْ مُّصْبِحِیْنَ ﴿١٣٧﴾ وَبِالَّیْلِ

और रात में	137	सुबह करते हुए (सुबह होते)	उन पर	अलबत्ता गुज़रते हो	और बेशक तुम	136	औरों को	हम ने हलाक किया

ع ٢٥ ٨

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَاِنَّ یُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿١٣٩﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَی

तरफ़	भाग गए वह	जब	139	रसूलों	अलबत्ता-से	यूनुस (अ)	और बेशक	138	तो क्या तुम अ़क्ल से काम नहीं लेते

الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِیْنَ ﴿١٤١﴾

141	धकेले गए	से	सो वह हुआ	तो कुरआ़ डाला	140	भरी हुई	कश्ती

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِیْمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِیْنَ ﴿١٤٣﴾

143	तस्बीह करने वाले	से	होता	यह कि वह	फिर अगर न	142	मलामत करने वाला	और वह	मछली	फिर उसे निगल लिया

النصف

لَلَبِثَ فِیْ بَطْنِهٖۤ اِلٰی یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ

और वह	चटयल मैदान में	फिर हम ने उसे फेंक दिया	144	दोबारा जी उठने के दिन (रोज़े हश्र)	तक	उस के पेट में	अलबत्ता रहता

سَقِیْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَیْهِ شَجَرَةً مِّنْ یَّقْطِیْنٍ ﴿١٤٦﴾ وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰی

तरफ़	और हम ने भेजा उस को	146	बेलदार	से	दरख़्त	उस पर	और हम ने उगाया	145	बीमार

مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ یَزِیْدُوْنَ ﴿١٤٧﴾ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰی حِیْنٍ ﴿١٤٨﴾

148	एक मुद्दत तक	तो हम ने उन्हें फ़ाइदा उठाने दिया	सो वह ईमान लाए	147	उस से ज़ियादा	या	एक लाख

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓىِٕكَةَ

फ़रिश्ते	हम ने पैदा किया	क्या	149	बेटे	और उन के लिए	बेटियां	क्या तेरे रब के लिए	पस पूछें उन से

اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَاۤ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَیَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

151	अलबत्ता कहते हैं	अपनी बुहतान तराज़ी	से	बेशक वह	याद रखो	150	देख रहे थे	और वह	औरत

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَی الْبَنَاتِ عَلَی الْبَنِیْنَ ﴿١٥٣﴾

153	बेटों पर	बेटियां	क्या उस ने पसंद किया	152	झूटे	और बेशक वह	अल्लाह साहिबे औलाद

مَا لَكُمْ ۟ كَیْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ

कोई सनद	तुम्हारे पास	क्या	155	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	154	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	तुम्हें क्या हो गया

مُّبِیْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوْا بَیْنَهٗ

उस के दरमियान	और उन्हों ने ठहराया	157	सच्चे	तुम हो	अगर	अपनी किताब	तो ले आओ	156	खुली

وَبَیْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

158	हाज़िर किए जाएंगे	बेशक वह	जिन्नात	और तहक़ीक़ जान लिया	एक रिश्ता	जिन्नात	और दरमियान

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِیْنَ ﴿١٦٠﴾

160	ख़ास किए हुए (चुने हुए)	अल्लाह के बन्दे	मगर	159	वह बयान करते हैं	उस से जो	पाक है अल्लाह

(याद करो) जब हम ने नजात दी उसे और उस के सब घर वालों को। (134)
पीछे रह जाने वालों में से एक बुढ़िया के सिवा। (135)
फिर हम ने और सब को हलाक किया। (136)
और बेशक तुम सुबह होते और रात में उन पर (उन की बस्तियों से) गुज़रते हो। (137)
तो क्या तुम अ़क्ल से काम नहीं लेते? (138)
और बेशक यूनुस (अ) अलबत्ता रसूलों में से थे। (139)
जब वह भाग कर भरी हुई कश्ती (के पास) गए। (140)
तो उन्हों ने कुरआ़ डाला, सो वह (कश्ती से) धकेले गए। (141)
फिर उन्हें मछली ने निगल लिया और वह (अपने आप को) मलामत कर रहे थे। (142)
फिर अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होते। (143)
तो वह उस के पेट में क़ियामत के दिन तक रहते। (144)
फिर हम ने उन्हें चटयल मैदान में फेंक दिया और वह बीमार थे। (145)
और हम ने उगाया उस पर एक बेलदार दरख़्त। (146)
और हम ने उसे एक लाख या उस से ज़ियादा लोगों की तरफ़ भेजा। (147)
सो वह लोग ईमान लाए और हम ने उन्हें एक मुद्दत तक के लिए फ़ाइदा उठाने दिया। (148)
पस आप (स) उन से पूछें क्या तेरे रब के लिए बेटियां हैं और उन के लिए बेटे? (149)
क्या हम ने फ़रिश्तों को औरत ज़ात पैदा किया है? और वह देख रहे थे? (150)
याद रखो, बेशक वह अपनी बुहतान तराज़ी से कहते हैं। (151)
(कि) अल्लाह साहिबे औलाद है, और वह बेशक झूटे हैं। (152)
क्या उस ने बेटियों को बेटों पर पसंद किया? (153)
तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़सला करते हो? (154)
तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (155)
क्या तुम्हारे पास कोई खुली सनद है? (156)
तो अपनी वह किताब ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (157)
और उन्हों ने उस के और जिन्नात के दरमियान एक रिश्ता ठहराया, और तहक़ीक़ जान लिया जिन्नात ने के बेशक वह (अ़ज़ाब में) हाज़िर (गिरफ़्तार) किए जाएंगे। (158)
अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (159)
सिवाए अल्लाह के चुने हुए बन्दे। (160)

فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ

जो-वह	सिवाए	162	उस के ख़िलाफ़ बहकाने वाले	नहीं हो तुम	161	तुम परस्तिश करते हो	और जो	तो बेशक तुम

صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّاِنَّا لَنَحْنُ

अलबत्ता हम	और बेशक हम	164	एक मुअय्यन दर्जा	मगर उस के लिए	हम में से	और नहीं	163	जहन्नम	जाने वाला

الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾

167	कहा करते	वह थे	और बेशक	166	तस्बीह करने वाले	अलबत्ता हम	और बेशक हम	165	सफ़ बस्ता होने वाले

لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾

169	ख़ास किए (मुंतख़िब)	अल्लाह के बन्दे	ज़रूर हम होते	168	पहले लोग	से	कोई नसीहत हमारे पास	अगर होती

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا

अपने बन्दों के लिए	हमारा वादा	और पहले सादिर हो चुका है	170	वह जान लेंगे	तो अनक़रीब	उस का	फिर उन्हों ने इन्कार किया

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ

अलबत्ता वही	हमारा लशकर	और बेशक	172	फ़तहमन्द	अलबत्ता वही	बेशक वह	171	रसूलों

الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾

175	वह देख लेंगे	पस अनक़रीब	और उन्हें देखते रहें	174	एक वक़्त तक	तक	उन से	पस एराज़ करें	173	ग़ालिब (जमा)

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ

सुबह	तो बुरी	उन के मैदान में	वह नाज़िल होगा	तो जब	176	वह जल्दी कर रहे हैं	तो क्या हमारे अज़ाब के लिए

الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾ وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾

179	वह देख लेंगे	पस अनक़रीब	और देखते रहें	178	एक मुद्दत	तक	उन से	और एराज़ करें	177	जिन को डराया जा चुका है

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى

पर	और सलाम	180	वह बयान करते हैं	उस से जो	इज़्ज़त वाला रब	तुम्हारा रब	पाक है

ع ٥ ٤٤ ٩ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

182	तमाम जहानों का रब	और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	181	रसूलों

آيَاتُهَا ٨٨ ❀ (٣٨) سُوْرَةُ صٓ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआत 5 — (38) सूरह साद — आयात 88

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾

2	और मुख़ालिफ़त	घमंड में	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	बल्कि	1	नसीहत देने वाला	क़ुरआन की क़सम	साद

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾

3	छुटकारा	वक़्त	और न था	तो वह फ़र्याद करने लगे	उम्मतें	उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दीं	कितनी ही

तो बेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो। (161) तुम नहीं बहका सकते उस (अल्लाह) के ख़िलाफ़ (किसी को)। (162) उस के सिवा जो जहन्नम में जाने वाला है। (163) और (फ़रिश्तों ने कहा) हम में से कोई भी ऐसा नहीं जिस का एक मुअय्यन दर्जा न हो। (164) और बेशक हम ही सफ़ बस्ता रहने वाले हैं। (165) और बेशक हम ही तस्बीह करने वाले हैं। (166) और बेशक वह (कुफ़्फ़ारे मक्का) कहा करते थे। (167) अगर हमारे पास होती पहले लोगों की कोई (किताबे) नसीहत। (168) तो हम ज़रूर अल्लाह के मुंतख़िब बन्दों में से होते। (169) फिर उन्हों ने उस का इन्कार किया तो वह अनक़रीब (उस का अन्जाम) जान लेंगे। (170) और हमारा वादा अपने बन्दों (यानी) रसूलों के लिए पहले (ही) सादिर हो चुका है। (171) बेशक वही फ़तह मन्द होंगे। (172) और बेशक अलबत्ता हमारा लशकर ही ग़ालिब रहेगा। (173) पस आप (स) एक वक़्त तक (थोड़ा अर्सा) उन से एराज़ करें। (174) और उन्हें देखते रहें, पस अनक़रीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (175) तो क्या वह हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं? (176) तो जब वह उन के मैदान में नाज़िल होगा तो उन की सुबह बुरी होगी जिन्हें डराया जा चुका है। (177) और आप (स) एक मुद्दत तक (थोड़ा अर्सा) उन से एराज़ करें। (178) और देखते रहें, पस अनक़रीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (179) पाक है तुम्हारा रब इज़्ज़त वाला रब, उस से जो वह बयान करते हैं। (180) और सलाम हो रसूलों पर। (181) और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए जो तमाम जहानों का रब है। (182)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

साद। नसीहत देने वाले क़ुरआन की क़सम! (1) (आप की दावत बर हक़ है) बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह घमंड और मुख़ालिफ़त में हैं। (2) कितनी ही उम्मतें उन से क़ब्ल हम ने हलाक कर दीं तो वह फ़र्याद करने लगे और (अब) छुटकारे का वक़्त न था। (3)

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۫ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ

यह जादूगर	काफ़िर (जमा)	और कहा	उन में से	एक डराने वाला	उन के पास आया	कि	और उन्हों ने तअ़ज्जुब किया

كَذَّابٌ ۝٤ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝٥

5	बड़ी अ़जीब	एक शै (बात)	बेशक यह	एक	माबूद	सारे माबूदों	क्या उस ने बना दिया	4	झूटा

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا

बेशक यह	अपने माबूदों पर	और जमे रहो	चलो	कि	उन के	सरदार	और चल पड़े

لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۝٦ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا

मगर-महज़	यह	नहीं	पिछला	मज़हब	में	ऐसी	हम ने नहीं सुना	6	इरादा की हुई (मतलब की)	कोई शै (बात)

اخْتِلَاقٌ ۝٧ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ

शक में	वह	बल्कि	हम में से	ज़िक्र (कलाम)	उस पर	क्या नाज़िल किया गया	7	मन घड़त

مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝٨ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ

ख़ज़ाने	उन के पास	क्या	8	मेरा अ़ज़ाब	चखा उन्हों ने	नहीं	बल्कि	मेरी नसीहत से

رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝٩ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों	क्या उन के लिए	9	बहुत अ़ता करने वाला	ग़ालिब	तुम्हारे रब की रहमत

وَمَا بَيْنَهُمَا ۣ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ۝١٠ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ

शिकस्त ख़ुर्दा	यहां	जो	एक लशकर	10	रस्सियों में (रस्सियां तान कर)	तो वह चढ़ जाएं	और जो उन दोनों के दरमियान

مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝١١ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۝١٢

12	कीलों वाला	और फ़िरऔन	और आद	क़ौमे नूह	उन से पहले	झुटलाया	11	गिरोहों में से

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ ۭ اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ ۝١٣ اِنْ

नहीं	13	गिरोह	वह थे	और अयका वाले	और क़ौमे लूत	और समूद

كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝١٤ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ ع ١٤ / ١٠

यह लोग	और इन्तिज़ार नहीं करते	14	अ़ज़ाब	पस आ पड़ा	रसूलों	झुटलाया	मगर	सब

اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۝١٥ وَقَالُوْا رَبَّنَا

ऐ हमारे रब	और उन्हों ने कहा	15	ढील	कोई	जिस के लिए नहीं	एक	चिंघाड़	मगर

عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۝١٦ اِصْبِرْ عَلٰى

उस पर	आप (स) सब्र करें	16	रोज़े हिसाब	पहले	हमारा हिस्सा	हमें	जल्दी दे

مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝١٧

17	ख़ूब रुजूअ़ करने वाला	बेशक वह	कुव्वत वाला	दाऊद (अ)	हमारे बन्दे	और याद करें	जो वह कहते हैं

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ۝١٨

18	और सुबह के वक़्त	शाम के वक़्त	वह तस्बीह करते थे	उस के साथ	पहाड़	बेशक हम ने मुसख़्ख़र कर दिए

और उन्हों ने तअ़ज्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डराने वाला आया, और काफ़िरों ने कहा: यह जादूगर है, झूटा है। (4)
क्या उस ने सारे माबूदों को बना दिया है एक माबूद, बेशक यह तो एक बड़ी अ़जीब बात है। (5)
और उन के कई सरदार यह कहते हुए चल पड़े कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, बेशक यह सोची समझी स्कीम है। (6)
हम ने पिछले मज़हब में ऐसी (बात) नहीं सुनी, यह तो महज़ मन घड़त है। (7)
क्या हम में से उसी परे अल्लाह का कलाम नाज़िल क्या गया? (हाँ) बल्कि वह शक में हैं मेरी नसीहत से, बल्कि (अभी) उन्हों ने मेरा अ़ज़ाब नहीं चखा। (8)
क्या तुम्हारे रब की रहमत के ख़ज़ाने उन के पास हैं? जो ग़ालिब, बहुत अ़ता करने वाला है। (9)
क्या उन के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो उन के दरमियान है? तो वह (आस्मानों पर) चढ़ जाएं रस्सियां तान कर। (10)
शिकस्त ख़ुर्दा गिरोहों में से यह भी एक लशकर है। (11)
उन से पहले झुटलाया क़ौमे नूह (अ) ने और आ़द और मीख़ों वाले फ़िरऔन ने। (12)
और समूद और क़ौमे लूत, और अयका वालों ने, गिरोह वह थे। (13)
उन सब ने रसूलों को झुटलाया, पस (उन पर) अ़ज़ाब आ पड़ा। (14)
और इन्तिज़ार नहीं करते यह लोग मगर एक चिंघाड़ का, जिस में कोई ढील (गुन्जाइश) न होगी। (15)
और उन्हों ने (मज़ाक़ के तौर पर) कहा कि ऐ हमारे रब! हमें जल्दी दे हमारा हिस्सा रोज़े हिसाब से पहले। (16)
जो वह कहते हैं उस पर आप (स) सब्र करें, और याद करें हमारे बन्दे दाऊद (अ) कुव्वत वाले को, बेशक वह ख़ूब रुजूअ़ करने वाला था। (17)
बेशक हम ने पहाड़ उस के साथ मुसख़्ख़र कर दिए थे, वह सुबह ओ शाम तस्बीह करते थे। (18)

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ۭ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ

हिक्मत	और हम ने उस को दी	उस की बादशाहत	और हम ने मज़बूत की	19	रुजूअ़ करने वाले	सब उस की तरफ़	इकट्ठे किए हुए	और परिन्दे

وقف لازم وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ ۙ

21	मेहराब	वह दीवार फांद कर आए	जब	ख़बर झगड़ने वाले	आप के पास आई (पहुँची)	और क्या	20	ख़िताब	और फ़ैसला कुन

اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى

ज़्यादती की	हम दो झगड़ने वाले	ख़ौफ़ न खाओ	उन्हों ने कहा	उन से	तो वह घबराया	दाऊद (अ)	पर-पास	जब वह दाख़िल हुए

بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى

तरफ़	और हमारी रहनुमाई करें	और ज़ियादती (बेइन्साफ़ी न) करें	हक़ के साथ	हमारे दरमियान	तो आप फ़ैसला कर दें	दूसरे पर	हम में से एक

سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ اِنَّ هٰذَآ اَخِيْ ۣ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ

और मेरे पास	दुंबियां	निन्यानवे (99)	उस के पास	मेरा भाई	बेशक यह	22	रास्ता	सीधा

نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۣ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ

(दाऊद अ ने) कहा	23	गुफ़्तगू में	और उस ने मुझे दबाया	वह मेरे हवाले कर दे	पस उस ने कहा	एक	दुंबी

لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَاۗءِ

भागीदार	से	अक्सर	और बेशक	अपनी दुंबियां	तरफ़-साथ	तेरी दुंबी	मांगने से	यक़ीनन उस ने ज़ुल्म किया

لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अ़मल किए दुरुस्त	जो ईमान लाए	सिवाए	बाज़	पर	उन में से बाज़	ज़ियादती किया करते हैं

وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۭ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا

झुक कर	और गिर गया	अपना रब	तो उस ने मग़्फ़िरत तलब की	हम ने उसे आज़माया है	कि कुछ	दाऊद (अ)	और ख़याल किया	वह-ऐसे	और बहुत कम

السجدة ١٠ وَّاَنَابَ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۭ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ

और अच्छा	अलबत्ता क़ुर्ब	हमारे पास	उस के लिए	और बेशक	यह	उस की	पस हम ने बख़्श दी	24	और उस ने रुजूअ़ किया

مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ

सो तू फ़ैसला कर	ज़मीन में	नाइब	हम ने तुझे बनाया	बेशक हम ने	ऐ दाऊद (अ)	25	ठिकाना

بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह का रास्ता	से	कि वह तुझे भटका दे	ख़ाहिश	और न पैरवी कर	हक़ के साथ	लोगों के दरमियान

اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا

उन्हों ने भुला दिया	उस पर कि	शदीद	अ़ज़ाब	उन के लिए	अल्लाह का रास्ता	से	भटकते हैं	जो लोग	बेशक

ع ٢ ١٢ ١١ يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاۗءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۭ

बातिल	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मान	और नहीं पैदा किया हम ने	26	रोज़े हिसाब

ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾ ۭ

27	आग	से	उन के लिए जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पस ख़राबी है	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	गुमान	यह

और इकट्ठे किए हुए परिन्दे (भी उस के मुसख़्ख़र थे) सब उस की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले थे। (19) और हम ने उस की बादशाहत मज़बूत की और उस को हिक्मत दी और फ़ैसला कुन ख़िताब। (20) और क्या आप (स) के पास झगड़ने वालों (अहले मुक़द्दमा) की ख़बर पहुँची? जब वह दीवार फांद कर मेहराब में आ गए। (21) जब वह दाख़िल हुए दाऊद (अ) के पास तो वह उन से घबरागए। उन लोगों ने कहाः डरो नहीं, हम दो झगड़ने वाले (अहले मुक़द्दमा) हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है तो आप हमारे दरमियान फ़ैसला कर दें हक़ के साथ, और बेइन्साफ़ी न करें, और सीधे रास्ते की तरफ़ हमारी रहनुमाई करें। (22) बेशक मेरे इस भाई के पास निन्यानवे (99) दुंबियां हैं और मेरे पास (सिर्फ़) एक दुंबी है, पस उस ने कहा कि वह (भी) मेरे हवाले कर दे, और उस ने मुझे गुफ़्तगू में दबाया है। (23) दाऊद (अ) ने कहाः सचमुच उस ने तेरी दुंबी मांग कर ज़ुल्म किया है (कि) अपनी दुंबियों के साथ मिलाले, और बेशक अक्सर साथी एक दूसरे पर ज़ियादती किया करते हैं सिवाए उन के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए और (ऐसे लोग) बहुत कम हैं, और दाऊद (अ) ने ख़याल किया कि हम ने कुछ उसे आज़माया है तो उस ने अपने रब से मग़्फ़िरत तलब की, और झुक कर (सिज्दे में) गिर गया। (24) पस हम ने बख़्श दी उस की यह (लग़्ज़िश), और बेशक उस के लिए हमारे पास क़ुर्ब और अच्छा ठिकाना है। (25) ऐ दाऊद (अ)! बेशक हम ने तुझे बनाया ज़मीन (मुल्क) में नाइब, सो तू लोगों के दरमियान हक़ (इंसाफ़) के साथ फ़ैसला कर और (अपनी) ख़ाहिश की पैरवी न कर कि वह तुझे भटका दे अल्लाह के रास्ते से, बेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटकते हैं उन के लिए शदीद अ़ज़ाब है इस लिए कि उन्हों ने रोज़े हिसाब को भुला दिया। (26) और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो उन के दरमियान है बातिल (बेकार ख़ाली अज़ हिक्मत) नहीं पैदा किया, यह गुमान है (उन लोगों का) जिन्हों ने कुफ़्र किया, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए आग से। (27)

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	उन की तरह जो फ़साद फैलाते हैं	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	क्या हम कर देंगे

اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ

मुबारक	आप (स) की तरफ़	हम ने उसे नाज़िल किया	एक किताब	28	बदकिरदारों की तरह	परहेज़गारों	हम कर देंगे	क्या

لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ

सुलेमान (अ)	दाऊद (अ) को	और हम ने अ़ता किया	29	अ़क़्ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें	उस की आयात	ताकि वह ग़ौर करें

نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ

असील घोड़े	शाम के वक़्त	उस पर-सामने	पेश किए गए	जब	30	रुजूअ़ करने वाला	बेशक वह	बहुत अच्छा बन्दा

الْجِيَادُ ﴿٣١﴾ فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى

यहां तक कि	अपने रब की याद	से	माल की मुहब्बत	मैं ने दोस्त रखा	बेशक मैं	तो उस ने कहा	31	उम्दा

تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًاۢ بِالسُّوْقِ

पिंडलियों पर	हाथ फेरना	फिर शुरु किया	मेरे सामने	फेर लाओ उन्हें	32	पर्दे में	छुप गए

وَالْاَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا

एक धड़	उस के तख़्त पर	और हम ने डाला	सुलेमान	और अलबत्ता हम ने आज़माइश की	33	और गर्दनों

ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ

किसी को	न सज़ा वार हो	ऐसी सलतनत	और अ़ता फ़रमा दे मुझे	मुझे बख़्शदे तू	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	34	फिर उस ने रुजूअ़ किया

مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ

उस के हुक्म से	वह चलती थी	हवा	फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए	35	अ़ता फ़रमाने वाला	तू	बेशक तू	मेरे बाद

رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّاٰخَرِيْنَ

और दूसरे	37	और ग़ोता मारने वाले	इमारत बनाने वाले	तमाम	और देव (जिन्नात)	36	वह पहुँचना चाहता	जहां	नर्मी से

مُقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ

बग़ैर	रोक रख	या	अब तू एहसान कर	हमारा अ़तिया	यह	38	ज़न्जीरों में	जकड़े हुए

حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾ وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ ع ١٤ ٣ ١٢

हमारा बन्दा	और आप (स) याद करें	40	ठिकाना	और अच्छा	अलबत्ता कुर्ब	हमारे पास	और बेशक उस के लिए	39	हिसाब

اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾ وقف لازم

41	और दुख	ईज़ा	शैतान	मुझे पहुँचाया	बेशक मैं	अपना रब	जब उस ने पुकारा	अय्यूब (अ)

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ

उस को	और हम ने अ़ता किया	42	और पीने के लिए	ठंडा	ग़ुस्ल के लिए	यह	अपना पाऊँ	(ज़मीन पर) मार

اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

43	अ़क़्ल वालों के लिए	और नसीहत	हमारी (तरफ़) से	रहमत	उन के साथ	और उन जैसे	उस के अहले ख़ाना

क्या हम कर देंगे? उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए उन लोगों की तरह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं? क्या हम परहेज़गारों को कर देंगे फ़ाजिरों (बदकिरदारों) की तरह? **(28)**
हम ने आप की तरफ़ एक मुबारक किताब नाज़िल की ताकि वह उस की आयात पर ग़ौर करें, और ताकि अ़क़्ल वाले नसीहत पकड़ें। **(29)**
और हम ने दाऊद (अ) को सुलेमान (अ) अ़ता किया, बहुत अच्छा बन्दा, बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करने वाला था। **(30)**
(वह वक़्त याद करो) जब शाम के वक़्त उस के सामने पेश किए गए असील, उम्दा घोड़े। **(31)**
तो उस ने कहा: बेशक मैं ने अपने रब की याद की वजह से माल की मुहब्बत को दोस्त रखा, यहां तक कि (घोड़े) छुप गए (दूरी के) परदे में। **(32)**
उन (घोड़ों) को मेरे सामने फेर लाओ, फिर वह उन की पिंडलियाँ और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा। **(33)**
और अलबत्ता हम ने सुलेमान (अ) की आज़माइश की और हम ने उस के तख़्त पर एक धड़ डाला, फिर उस ने (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ किया। **(34)**
उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सलतनत अ़ता फ़रमा दे जो मेरे बाद किसी को सज़ावार (मयस्सर) न हो, बेशक तू ही अ़ता करने वाला है। **(35)**
फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए हवा को, जहां वह पहुँचना चाहता, वह उस के हुक्म से नर्म नर्म चलती। **(36)**
और तमाम जिन्नात (ताबे कर दिए) इमारत बनाने वाले और ग़ोता मारने वाले। **(37)**
और दूसरे ज़न्जीरों में जकड़े हुए। **(38)**
यह हमारा अ़तिया है, अब तू एहसान कर या रख छोड़ हिसाब के बग़ैर (तुम से कुछ हिसाब न होगा)। **(39)**
और बेशक उस के लिए हमारे पास अलबत्ता कुर्ब और अच्छा ठिकाना है। **(40)**
और आप (स) याद करें हमारे बन्दे अय्यूब (अ) को जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने ईज़ा और दुख पहुँचाया है। **(41)**
(हम ने फ़रमाया) ज़मीन पर मार अपना पाऊँ, यह (लो) ग़ुस्ल के लिए ठंडा और पीने के लिए (शीरीं पानी)। **(42)**
और हम ने उस को अहले ख़ाना और उन के साथ उन जैसे (और भी) अ़ता किए (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अ़क़्ल वालों के लिए नसीहत। **(43)**

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ

साबिर	हम ने उसे पाया	बेशक हम	और क़सम न तोड़	और उस से मार उस को	झाड़ू	अपने हाथ में	और तू ले

نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

और याक़ूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	इब्राहीम (अ)	हमारे बन्दों	और याद करें	44	बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करने वाला	अच्छा बन्दा

اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾ ۚ

46	घर (आख़िरत का)	याद	ख़ास सिफ़त	हम ने उन्हें मुम्ताज़ किया	बेशक हम	45	और आँखों वाले	हाथों वाले

وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ ؕ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ

इस्माईल (अ)	और याद करें	47	सब से अच्छे	चुने हुए	अलबत्ता-से	हमारे नज़्दीक	और बेशक वह

وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ ؕ هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ

और बेशक	यह एक नसीहत	48	सब से अच्छे लोग	से	और यह तमाम	और ज़ुलकिफ़्ल (अ)	और अलयसअ़ (अ)

لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ ۙ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ ۚ

50	दरवाज़े	उन के लिए	खुले हुए	हमेशा रहने के	बाग़ात	49	ठिकाना	अलबत्ता अच्छा	परहेज़गारों के लिए

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾

51	और शराब (मश्रूबात)	बहुत से	मेवे	उन में	मंगवाएंगे	उन में	तकिया लगाए हुए वह

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ

वादा किया जाता है तुम से	जो-जिस	यह	52	हम उम्र	निगाह	नीचे रखने वालियां	और उन के पास

لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾ ۚ هٰذَا ؕ وَاِنَّ

और बेशक	यह	54	ख़त्म होना	उसके लिए - उस को नहीं	यक़ीनन हमारा रिज़्क़	यह	बेशक	53	रोज़े हिसाब के लिए

لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ ۙ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا ۙ

यह	56	बिछोना	सो बुरा	वह उस में दाख़िल होंगे	जहन्नम	55	ठिकाना	अलबत्ता बुरा	सरकशों के लिए

فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ ۙ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ ؕ هٰذَا

यह	58	कई क़िस्में	उस की शक्ल की	और उस के अ़लावा	57	और पीप	खौलता हुआ पानी	पस उस को चखो तुम

فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا ۢ بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا

वह कहेंगे	59	दाख़िल होने वाले जहन्नम में	बेशक वह	उन्हें	न हो कोई फ़राख़ी	तुम्हारे साथ	घुस रहे हैं	एक जमाअ़त

بَلْ اَنْتُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا ۢ بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

60	ठिकाना	सो बुरा	हमारे लिए	तुम ही यह आगे लाए	बेशक तुम	तुम्हें	कोई मरहबा न हो	बल्कि तुम

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ﴿٦١﴾

61	जहन्नम में	दो चंद	अ़ज़ाब	तू ज़ियादा कर दे	यह	हमारे लिए	जो आगे लाया	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾ ؕ

62	अश्रार (बहुत बुरे)	से	हम शुमार करते थे उन्हें	वह लोग	हम नहीं देखते	क्या हुआ हमें	और वह कहेंगे

और अपने हाथ में झाड़ू ले और तू उस से (अपनी बीवी को) मार, और क़सम न तोड़, बेशक हम ने उसे साबिर पाया (और) अच्छा बन्दा, बेशक अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करने वाला। (44)

और आप (स) हमारे बन्दों इब्राहीम (अ) और इस्हाक़ (अ) और याक़ूब (अ) को याद करें जो हाथों वाले और आँखों वाले (इल्म ओ अ़क़्ल की क़ुव्वतों वाले) थे। (45)

हम ने उन्हें एक ख़ास सिफ़त से मुम्ताज़ किया (और वह है) याद आख़िरत के घर की। (46)

और बेशक वह हमारे नज़्दीक चुने हुए सब से अच्छे लोगों में से थे। (47)

और आप (स) याद करें इस्माईल (अ) और अलयसअ़ (अ) और ज़ुलकिफ़्ल (अ) को, और यह तमाम ही सब से अच्छे लोगों में से थे। (48)

यह एक नसीहत है, और परहेज़गारों के लिए अलबत्ता अच्छा ठिकाना है। (49)

हमेशा रहने के बाग़ात, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। (50)

उन में तकिया लगाए हुए होंगे, और उन में मंगवाएंगे मेवे बहुत से और मश्रूबात। (51)

और उन के पास नीची निगाह रखने वाली (बा हया) हम उम्र (औरतें) होंगी। (52)

यह है जिस का तुम से वादा किया जाता है रोज़े हिसाब के लिए। (53)

बेशक यह हमारा रिज़्क़ है, उस को (कभी) ख़तम होना नहीं। (54)

यह है (जज़ा)। और बेशक सरकशों के लिए अलबत्ता बुरा ठिकाना है। (55)

(यानी) जहन्नम, जिस में वह दाख़िल होंगे, सो बुरा है फ़र्श (उन की आरामगाह)। (56)

यह खौलता हुआ पानी और पीप है, पस तुम उस को चखो। (57)

और उस के अ़लावा उस की शक्ल की कई क़िस्में होंगी। (58)

यह एक जमाअ़त है जो तुम्हारे साथ (जहन्नम में) दाख़िल हो रही है, उन्हें कोई फ़राख़ी न हो, बेशक वह जहन्नम में दाख़िल होने वाले हैं। (59)

वह कहेंगेः बल्कि तुम्हें कोई फ़राख़ी न हो, बेशक तुम ही हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाए हो, सो बुरा है ठिकाना। (60)

वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! जो हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाया है तू जहन्नम में (उस के लिए) अ़ज़ाब दो चन्द कर दे। (61)

और वह कहेंगे हमें क्या हुआ? हम (दोज़ख़ में) उन लोगों को नहीं देखते जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। (62)

क्या हम ने उन्हें ठठे में पकड़ा था? या कज हो गई हैं उन से (हमारी) आँखें? **(63)** बेशक अहले दोज़ख़ का बाहम यह झगड़ना बिलकुल सच है। **(64)** आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि मैं डराने वाला हूँ और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता ज़बरदस्त है। **(65)** परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, ग़ालिब, बड़ा बख़्शने वाला। **(66)** आप फ़रमा दें यह एक बड़ी ख़बर है। **(67)** तुम उस से बेपरवाह हो। **(68)** मुझे कुछ ख़बर न थी आ़लमे बाला (बुलन्द क़द्र फ़रिश्तों) की जब वह बाहम झगड़ते थे। **(69)** मेरी तरफ़ इस के सिवा वहि नहीं की जाती कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। **(70)** (याद करो) जब तुम्हारे रब ने कहा फ़रिश्तों को कि मैं मिट्टी से एक बशर पैदा करने वाला हूँ। **(71)** फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर दूँ और उस में अपनी रूह से फूँक दूँ तो तुम गिर पड़ो उस के आगे सिज्दा करते हुए। **(72)** पस सब फ़रिश्तों ने इकटठे सिज्दा किया। **(73)** सिवाए इब्लीस के, उस ने तकब्बुर किया और वह हो गया काफ़िरों में से। **(74)** (अल्लाह ने) फ़रमाया ऐ इब्लीस! उस को सिज्दा करने से तुझे किस ने मना किया (रोका) जिसे मैं ने अपने हाथों से पैदा किया? क्या तू ने तकब्बुर किया (अपने को बड़ा समझा) या तू बुलन्द दरजे वालों में से है? **(75)** उस ने कहा: मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे पैदा किया मिट्टी से। **(76)** (अल्लाह तआ़ला ने) फ़रमाया: पस यहां से निकल जा क्योंकि तू रांदा-ए-दरगाह है। **(77)** और बेशक तुझ पर मेरी लानत रहेगी रोज़े क़ियामत तक। **(78)** उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे। **(79)** (अल्लाह ने) फ़रमाया: पस तू मोहलत दिए जाने वालों में से है। **(80)** उस दिन तक जिस का वक़्त मुझे मालूम है। **(81)** उस ने कहा मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं उन सब को ज़रूर गुमराह करूँगा। **(82)**

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ

बिलकुल सच	बेशक यह	63	आँखें	उन से	कज हो गई हैं	या	ठठे में	क्या हम ने उन्हें पकड़ा था

تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ع ٤ ١٣

अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	और नहीं	डराने वाला	कि मैं	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें	64	अहले दोज़ख़	बाहम झगड़ना

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ

ग़ालिब	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	रब	65	ज़बरदस्त	वाहिद (यकता)

الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	मुँह फेरने वाले (बेपरवाह हो)	उस से	तुम	67	एक ख़बर बड़ी	वह-यह	फ़रमादें	66	बड़ा बख़्शने वाला

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍۢ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾ اِنْ يُّوْحٰٓى

नहीं वहि की जाती	69	वह बाहम झगड़ते थे	जब	आ़लमे बाला की	कुछ ख़बर	मेरे पास (मुझे)	न था

اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ

कि मैं	फ़रिश्तों को	तुम्हारा रब	जब कहा	70	साफ़ साफ़	मैं डराने वाला	यह कि	सिवाए	मेरी तरफ़

خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ

अपनी रूह	से	उस में	और मैं फूँकूं	मैं दुरुस्त कर दूँ उसे	फिर जब	71	मिट्टी से	एक बशर	पैदा करने वाला

فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّآ

सिवाए	73	इकटठे	सब	फ़रिश्ते	पस सिज्दा किया	72	सिज्दा करते हुए	उस के लिए (आगे)	तो तुम गिर पड़ो

اِبْلِيْسَ ۭ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ

किस ने मना किया तुझे	ऐ इब्लीस	उस ने फ़रमाया	74	काफ़िरों	से	और वह हो गया	उस ने तकब्बुर किया	इब्लीस

اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ

से	या तू है	क्या तू ने तकब्बुर किया	अपने हाथों से	मैं ने पैदा किया	उस को जिसे	कि तू सिज्दा करे

الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ

और तू ने पैदा किया उसे	आग से	तू ने पैदा किया मुझे	उस से	बेहतर	मैं	उस ने कहा	75	बुलन्द दरजे वाले

مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيْكَ

तुझ पर	और बेशक	77	रांदा-ए-दरगाह	क्योंकि तू	यहां से	पस निकल जा	उस ने फ़रमाया	76	मिट्टी	से

لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى

तक	पस तू मुझे मोहलत दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	78	रोज़े क़ियामत	तक	मेरी लानत

يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِلٰى يَوْمِ

दिन	तक	80	मोहलत दिए जाने वाले	से	पस बेशक तू	उस ने फ़रमाया	79	जिस दिन उठाए जाएंगे

الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾

82	सब	मैं ज़रूर उन्हें गुमराह करूँगा	सो तेरी इज़्ज़त की क़सम	उस ने कहा	81	वक़्त मुअ़य्यन

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾

84	मैं कहता हूँ	और सच	यह हक़ (सच)	उस ने फ़रमाया	83	मुख़्लिस (जमा)	उन में से	सिवाए तेरे बन्दे

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ

फ़रमा दें	85	सब	उन से	तेरे पीछे चलें	और उन से जो	तुझ से	जहन्नम	मैं ज़रूर भर दूँगा

مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾ اِنْ

नहीं	86	बनावट करने वालों से	मैं	और नहीं	कोई अजर	इस पर	मैं मांगता तुम से	नहीं

ع ٢٤ / ١٤

هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾

88	एक वक़्त	बाद	उस का हाल	और तुम ज़रूर जान लोगे	87	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	यह मगर

آيَاتُهَا ٧٥ ❀ (٣٩) سُوْرَةُ الزُّمَرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٨

आयात 75 — (39) सूरतुज़ ज़ुमर — टोलियाँ, गिरोह — रुकुआत 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	बेशक हम ने नाज़िल की	1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह की तरफ़ से	यह किताब	नाज़िल किया जाना

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿٢﴾ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ

अल्लाह के लिए दीन	याद रखो	2	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	पस अल्लाह की इबादत करो	हक़ के साथ	यह किताब

وقف لازم

الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ

नहीं इबादत करते हम उन की	दोस्त	उस के सिवा	बनाते हैं	और जो लोग	ख़ालिस

اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ

उस में	वह	जिस में	उन के दरमियान	फ़ैसला कर देगा	बेशक अल्लाह	क़ुर्ब का दर्जा	अल्लाह का	मगर इस लिए कि वह मुक़र्रब बना दें हमें

يَخْتَلِفُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ

चाहता अल्लाह	अगर	3	नाशुक्रा	झूटा	जो हो	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	वह इख़्तिलाफ़ करते हैं

اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ

वह पाक है	जिसे वह चाहता	वह पैदा करता है (मख़्लूक़)	उस से जो	अलबत्ता वह चुन लेता	औलाद	कि बनाए

هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ

हक़ (दुरुस्त तदबीर के) साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	4	ज़बरदस्त	वाहिद (यकता)	वही अल्लाह

يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ

सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया	रात पर	और दिन को लपेटता है	दिन पर	रात	वह लपेटता है

وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٥﴾

5	बख़्शने वाला	वह ग़ालिब	याद रखो	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	हर एक चलता है	और चाँद

उन में से तेरे मुख़्लिस (ख़ास) बन्दों के सिवा। (83) (अल्लाह ने) फ़रमायाः यह सच है और मैं सच ही कहता हूँ। (84) मैं ज़रूर जहन्नम भर दूँगा तुझ से और उन सब से जो तेरे पीछे चलें। (85) आप (स) फ़रमा दें: मैं तुम से इस (तबलीग़े क़ुरआन) पर कोई अजर नहीं मांगता, और नहीं हूँ मैं बनावट करने वालों में से। (86) यह (क़ुरआन) नहीं है मगर तमाम जहानों के लिए नसीहत। (87) और उस का हाल तुम एक वक़्त के बाद (जल्द ही) ज़रूर जान लोगे। (88)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

इस किताब का नाज़िल किया जाना अल्लाह ग़लिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से है। (1) बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ यह किताब हक़ के साथ नाज़िल की है, पस तुम अल्लाह की इबादत करो दीन उसी के लिए ख़ालिस कर के। (2) याद रखो! दीन ख़ालिस अल्लाह ही के लिए है, और जो लोग उस के सिवा दोस्त बनाते हैं (वह कहते हैं) हम सिर्फ़ इस लिए उन की इबादत करते हैं कि वह क़ुर्ब के दरजे में हमें अल्लाह का मुक़र्रब बना दें, बेशक अल्लाह उन के दरमियान उस (अम्र) में फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, बेशक अल्लाह किसी झूटे, नाशुक्रे को हिदायत नहीं देता। (3) अगर अल्लाह चाहता कि बनाले (किसी को अपनी) औलाद तो वह अपनी मख़्लूक़ में से जिस को चाहता चुन लेता, वह पाक है, वही है अल्लाह यकता, ज़बरदस्त। (4) उस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को दुरुस्त तदबीर के साथ, वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उस ने मुसख़्ख़र किया सूरज और चाँद को, हर एक, एक मुद्दत मुक़र्ररा तक चलता है, याद रखो, वह ग़ालिब, बख़्शने वाला है। (5)

उस ने तुम्हें नफ़्से वाहिद (आदम अ) से पैदा किया, फिर उस ने उस से उस का जोड़ा बनाया, और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ जोड़े भेजे, वह तुम्हें पैदा करता है तुम्हारी माँओं के पेटों में, तीन तारीकियों के अन्दर एक कैफ़ियत के बाद दूसरी कैफ़ियत में, यह है तुम्हारा अल्लाह, तुम्हारा परवरदिगार, उसी के लिए है बादशाहत, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तुम कहां फिरे जाते हो? (6)
अगर तुम नाशुक्री करोगे तो बेशक अल्लाह तुम से बेनियाज़ है, और वह पसंद नहीं करता अपने बन्दों के लिए नाशुक्री, और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पसंद करता है, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। बेशक वह दिलों की पोशीदा बातों को (भी) जानने वाला है। (7)
और जब इन्सान को कोई सख़्ती पहुँचे तो वह अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ कर के उसे पुकारता है, फिर जब वह उसे अपनी तरफ़ से नेमत दे तो वह भूल जाता है जिस के लिए वह उस से क़ब्ल (अल्लाह को) पुकारता था, और वह अल्लाह के लिए शरीक बनालेता है ताकि उस के रास्ते से गुमराह करे, आप (स) फ़रमा दें: तू फ़ाइदा उठाले अपने कुफ़्र से थोड़ा, बेशक तू दोज़ख़ वालों में से है। (8)
(क्या यह नाशुक्रा बेहतर है) या वह? जो रात की घड़ियों में इबादत करने वाला सिज्दा करने वाला हो कर और क़याम करने वाला, (और) वह आख़िरत से डरता है और अपने रब की रहमत से उम्मीद रखता है। आप (स) फ़रमा दें: क्या बराबर हैं वह जो इल्म रखते हैं और वह जो इल्म नहीं रखते? इस के सिवा नहीं कि अक़्ल वाले ही नसीहत क़ुबूल करते हैं। (9)
आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! तुम अपने रब से डरो, जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छे काम किए उन के लिए भलाई है, और अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ है, इस के सिवा नहीं कि सब्र करने वालों को उन का अजर बेहिसाब पूरा पूरा दिया जाएगा। (10)

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	और उस ने भेजे	उस का जोड़ा	उस से	फिर उस ने बनाया	नफ़्से वाहिद	से	उस ने पैदा किया तुम्हें

مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا

एक कैफ़ियत	तुम्हारी माएं	पेटों में	वह पैदा करता है तुम्हें	जोड़े	आठ (8)	चौपायों से

مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ

नहीं कोई माबूद	बादशाहत	उस के लिए	तुम्हारा परवरदिगार	यह तुम्हारा अल्लाह	तीन (3)	तारीकियों में	दूसरी कैफ़ियत	के बाद

اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿٦﴾ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ قف

तुम से	बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	अगर तुम नाशुक्री करोगे	6	तुम फिरे जाते हो	तो कहां	उस के सिवा

وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ

कोई बोझ उठाने वाला बोझ	और नहीं उठाता	वह उसे पसंद करता है तुम्हारे लिए	तुम शुक्र करोगे	और अगर	नाशुक्री	अपने बन्दों के लिए	और वह पसंद नहीं करता

اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ

बेशक वह	तुम करते थे	वह जो	फिर वह जतला देगा तुम्हें	लौटना है तुम्हें	अपना रब	तरफ़	फिर	दूसरे का

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٧﴾ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ

वह पुकारता है अपना रब	कोई सख़्ती	इन्सान	लगे-पहुँचे	और जब	7	सीनों (दिलों) की पोशीदा बातें	जानने वाला

مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ

उस की तरफ़-लिए	वह पुकारता था	जो	वह भूल जाता है	अपनी तरफ़ से	नेमत	वह उसे दे	फिर जब	उस की तरफ़	रुजूअ़ कर के

مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ

फ़ाइदा उठा ले	फ़रमा दें	उस के रास्ते से	ताकि गुमराह करे	शरीक (जमा)	और वह बना लेता है अल्लाह के लिए	उस से क़ब्ल

بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖۗ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ﴿٨﴾ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ

इबादत करने वाला	वह	या जो	8	आग (दोज़ख़) वाले	से	बेशक तू	थोड़ा	अपने कुफ़्र से

اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ

अपना रब	रहमत	और उम्मीद रखता है	आख़िरत	वह डरता है	और क़याम करने वाला	सिज्दा करने वाला	घड़ियों में रात की

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا

इस के सिवा नहीं	जो इल्म नहीं रखते	और वह लोग	वह इल्म रखते हैं	वह लोग जो	बराबर हैं	क्या	फ़रमा दें

يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٩﴾ قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا ع ١ ١٥

तुम डरो	ईमान लाए	जो	ऐ मेरे बन्दो	फ़रमा दें	9	अक़्ल वाले	नसीहत क़ुबूल करते हैं

رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ

और अल्लाह की ज़मीन	भलाई	इस दुनिया	में	अच्छे काम किए	उन के लिए जिन्हों ने	अपना रब

وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

10	बेहिसाब	उन का अजर	सब्र करने वाले	पूरा बदला दिया जाएगा	इस के सिवा नहीं	वसीअ़

قُلْ اِنِّیْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿١١﴾ وَاُمِرْتُ لِاَنْ

उस का	और मुझे हुक्म दिया गया	11	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करूँ	कि	बेशक मुझे हुक्म दिया गया	फ़रमा दें

اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٢﴾ قُلْ اِنِّیْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّیْ عَذَابَ

अ़ज़ाब	अपना रब	मैं नाफ़रमानी करूँ	अगर	बेशक मैं डरता हूँ	फ़रमा दें	12	फ़रमांबरदार-मुस्लिम (जमा)	पहला	कि मैं हूँ

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِیْ ﴿١٤﴾ فَاعْبُدُوْا

परस्तिश करो	14	अपना दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	फ़रमा दें	13	एक बड़ा दिन

مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपने आप को	घाटे में डाला	वह जिन्हों ने	घाटा पाने वाले	बेशक	फ़रमा दें	उस के सिवाए	जिस की तुम चाहो

وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٥﴾ لَهُمْ

उन के लिए	15	सरीह	घाटा	वह	यह	ख़ूब याद रखो	रोज़े क़ियामत	और अपने घर वाले

مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ

उस से	डराता है अल्लाह	यह	सायबान (चादरें)	और उन के नीचे से	आग के	सायबान	उन के ऊपर से

عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ

कि	सरकश (शैतान)	बचते रहे	और जो लोग	16	पस मुझ से डरो	ऐ मेरे बन्दो	अपने बन्दों

يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾ الَّذِيْنَ

वह जो	17	मेरे बन्दों	सो ख़ुशख़बरी दें	ख़ुशख़बरी	उन के लिए	अल्लाह की तरफ़	और उन्हों ने रुजूअ़ किया	उस की परस्तिश करें

يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ

उन्हें हिदायत दी अल्लाह ने	वह जिन्हें	वही लोग	उस की अच्छी बातें	फिर पैरवी करते हैं	बात	सुनते हैं

وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٨﴾ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ

अ़ज़ाब	हुक्म-वईद	उस पर	साबित हो गया	क्या तो-जो-जिस	18	अ़क़्ल वाले	वह	और यही लोग

اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِی النَّارِ ﴿١٩﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ

बाला ख़ाने	उन के लिए	अपना रब	जो लोग डरे	लेकिन	19	आग में	जो	बचा लोगे	क्या पस तुम

مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ

ख़िलाफ़ नहीं करता	अल्लाह का वादा	नहरें	उन के नीचे	जारी हैं	बने बनाए	बाला ख़ाने	उन के ऊपर से

اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ

चश्मे	फिर चलाया उस को	पानी	आस्मान से	उतारा	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	20	वादा	अल्लाह

فِی الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا

ज़र्द	फिर तू देखे उसे	फिर वह ख़ुश्क हो जाती है	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	खेती	उस से	वह निकालता है	फिर	ज़मीन में

ع ١٢ ٢ ١٦ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾

21	अ़क़्ल वालों के लिए	अलबत्ता नसीहत	इस में	बेशक	चूरा चूरा	फिर वह कर देता है उसे

आप (स) फ़रमा दें कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ ख़ालिस कर के उसी के लिए दीन। (11) और मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहले मैं ख़ुद मुसलिम बनों। (12) आप (स) फ़रमा दें, बेशक मैं डरता हूँ कि अगर मैं नाफ़रमानी करूँ अपने परवरदिगार की, एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से। (13) आप (स) फ़रमा दें: मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए अपना दीन ख़ालिस कर के। (14) पस तुम जिस की चाहो परस्तिश करो अल्लाह के सिवा, आप (स) फ़रमा दें: बेशक वह घाटा पाने वाले हैं जिन्हों ने अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाला रोज़े क़ियामत, ख़ूब याद रखो! यही है सरीह घाटा। (15) उन के लिए उन के ऊपर से आग के साएबान होंगे और उन के नीचे से भी (आग की) चादरें। यह है जिस से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है। ऐ मेरे बन्दो! मुझ ही से डरो। (16) और जो लोग तागूत से बचते रहे कि उस की परस्तिश करें, और उन्हों ने अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ किया, उन के लिए ख़ुशख़बरी है। सो आप (स) मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी दें। (17) जो (पूरी तवज्जुह से) बात सुनते हैं फिर उस की अच्छी अच्छी बातों की पैरवी करते हैं, यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, और यही लोग हैं अ़क़्ल वाले। (18) तो क्या जिस पर अ़ज़ाब की वईद साबित हो गई, पस क्या तुम उसे बचा लोगे जो आग में (गिर गया)? (19) लेकिन जो लोग डरे अपने रब से, उन के लिए बाला ख़ाने हैं, उन के ऊपर बने बनाए बाला ख़ाने हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं, अल्लाह का वादा है, अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (20) क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उसे चश्मे (बना कर) ज़मीन में चलाया, फिर वह उस से मुख़्तलिफ़ रंगों की खेती निकालता है, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है, फिर तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वह उसे चूरा चूरा कर देता है, बेशक इस में अलबत्ता नसीहत है अ़क़्ल वालों के लिए। (21)

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ

सो ख़राबी	अपने रब की तरफ़ से	नूर	पर	तो वह	इस्लाम के लिए	उस का सीना	अल्लाह ने खोल दिया	क्या - पस जिस

لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۲﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	22	खुली	गुमराही	में	यही लोग	अल्लाह की याद	से	उन के दिल	उन के लिए- सख़्त

نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ

जिल्दें	उस से	बाल खड़े हो जाते हैं	दोहराई गई	मिलती जुलती (आयात वाली)	एक किताब	बेहतरीन कलाम	नाज़िल किया

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की याद	तरफ़	और उन के दिल	उन की जिल्दें	नर्म हो जाती हैं	फिर	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

गुमराह करता है अल्लाह	और जो- जिस	जिसे वह चाहता है	हिदायत देता है उस से	अल्लाह की हिदायत	यह

فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۲۳﴾ اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

बुरा अज़ाब	अपने चेहरे से	बचाता है	क्या पस जो	23	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿۲۴﴾ كَذَّبَ

झुटलाया	24	तुम कमाते (करते) थे	जो	तुम चखो	ज़ालिमों को	और कहा जाएगा	क़ियामत के दिन

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۵﴾

25	उन्हें ख़याल न था	जहां से	अज़ाब	तो उन पर आ गया	इन से पहले	जो लोग

فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ

आख़िरत	और अलबत्ता अज़ाब	दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुस्वाई	पस चखाया उन्हें अल्लाह ने

اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ وقف لازم

में	लोगों के लिए	और तहक़ीक़ हम ने बयान की	26	वह जानते होते	काश	बहुत ही बड़ा

هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾ ۚ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

अरबी	कुरआन	27	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	मिसाल	हर क़िस्म की	इस कुरआन

غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۲۸﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ

उस में	एक आदमी	एक मिसाल	बयान की अल्लाह ने	28	परहेज़गारी इख़्तियार करें	ताकि वह	किसी कजी के बग़ैर

شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ

मिसाल (हालत)	दोनों की बराबर है	क्या	एक आदमी के लिए	सालिम (ख़ालिस)	और एक आदमी	आपस में ज़िददी	कई शरीक

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۹﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ

और बेशक वह	मरने वाले	बेशक तुम	29	इल्म नहीं रखते	उन में अक्सर	बल्कि	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

مَّيِّتُوْنَ ﴿۳۰﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿۳۱﴾ ع ٣ ١٧

31	तुम झगड़ोगे	अपना रब	पास	क़ियामत के दिन	बेशक तुम	फिर	30	मरने वाले

पस क्या जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है (क्या वह और संगदिल बराबर हैं) सो ख़राबी है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र से ज़ियादा सख़्त हो गए, यही लोग गुमराही में हैं खुली। (22)
अल्लाह ने बेहतरीन कलाम नाज़िल किया, एक किताब जिस के मज़ामीन मिलते जुलते, बार बार दोहराए गए हैं, उस से बाल (रोंगटे) खड़े हो जाते हैं उन लोगों की जिल्दों पर जो अपने रब से डरते हैं, फिर उन की जिल्दें और उन के दिल नर्म हो जाते हैं अल्लाह की याद की तरफ़ (राग़िब होते हैं), यह है अल्लाह की हिदायत, उस से अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और जिसे अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)
पस क्या जो शख़्स क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अज़ाब से बचाता है (अहले जन्नत के बराबर हो सकता है?) और ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (24)
जो लोग उन से पहले थे उन्हों ने झुटलाया तो उन पर अज़ाब आगया जहां से उन्हें ख़याल (भी) न था। (25)
पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रुस्वाई (का मज़ा) चखाया, और अलबत्ता आख़िरत का अज़ाब बहुत ही बड़ा है, काश वह जानते होते। (26)
और तहक़ीक़ हम ने इस कुरआन में लोगों के लिए बयान की हर क़िस्म की मिसाल ताकि वह नसीहत पकड़ें। (27)
कुरआन अरबी (ज़बान में), किसी (भी) कजी के बग़ैर ताकि वह परहेज़गारी इख़्तियार करें। (28)
अल्लाह ने एक मिसाल बयान की है, एक आदमी (ग़ुलाम) है, उस में कई (आक़ा) शरीक हैं जो आपस में ज़िददी (झगड़ालू) हैं और एक आदमी एक आदमी का (ग़ुलाम) है, क्या दोनों की हालत बराबर है?
तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं बल्कि उन में से अक्सर इल्म नहीं रखते। (29)
बेशक तुम मरने (इन्तिक़ाल करने) वाले हो, और वह (भी) मरने वाले हैं। (30)
फिर बेशक तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे। (31)